thearyasamaj.org

पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2014-16

ओ३म्

कृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-१७, अंक:-२; अगस्त, सन्-२०१४, सं०-२०७१ वि०, दयानंदाब्द १९१, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११५; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

प्रेमचंद जयन्ती पर विशेष

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद साम्यवादी नहीं, आर्यसमाजी थे!

हमीरपुर में आर्यसमाज व आर्यपुत्री पाठशाला की स्थापना की

-प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु-

उपन्यास सम्राट् मुंशी प्रेमचन्द के नाम और काम से कौन देशाभिमानी और साहित्य प्रेमी परिचित नहीं है? विश्व की अनेक भाषाओं में उनकी कहानियाँ अनूदित होकर छप रही हैं। उनके जीवन पर और साहित्य पर अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं और यह क्रम कभी बन्द नहीं होगा। उनकी पत्नी श्रीमती शिवरानी देवी जी व उनके पुत्र श्री अमृत राय ने उन पर एक पुस्तक लिखी है। और भी कई लेखकों व प्रकाशन संस्थाओं ने श्री प्रेमचन्द जी की जीवनियाँ प्रकाशित की हैं।

हमने भी ऐसी कई पुस्तकें देखी हैं। इन सब पुस्तकों में कई विशेषताएँ तो मिलेंगी परन्तु इन सब में एक न्यूनता किसी भी न्यायप्रिय व्यक्ति को चुभती है। इनमें से किसी भी लेखक ने मुंशी प्रेमचन्द जी के आर्यसमाज से संबन्धों पर प्रकाश नहीं डाला। हाँ, एक अंग्रेजी पुस्तक में उनके शुद्धि-आन्दोलन से मतभेद को खूब उछाला गया है। भारत में छद्म धर्म निरपेक्षता के नाम पर आज यही कुछ हो रहा है। याद रखिये कि लोकतांत्रिक संस्थाओं में मतभेद की सम्भावना रहती ही है। यह सिद्धान्तभेद नहीं था। नीति का एक सामान्य भेद था। प्रेमचन्द जी को आर्य समाज के दो ऐतिहासिक सम्मेलनों में सम्मान से आमंत्रित किया गया। उनका लाहौर में आर्यों के विराट् सम्मेलन में दिया गया भाषण भी इन लोगों की पुस्तकों में उपेक्षित रहा और देश के सर्वप्रथम राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान स्वामी श्रद्धानन्द जी के गुरुकुल कांगड़ी में दिया गया भाषण भी इनके बहिष्कार का शिकार हो गया।

किसी मार्क्सवादी ने अपनी निब घिसा-घिसा कर प्रेमचन्द जी को गोर्की का चेला सिद्ध किया तो किसी ने कुछ गांधीवादी बना दिया। उस युग का कौन सा हिन्दी प्रेमी, देशभक्त साहित्यकार है जिस पर महर्षि दयानन्द के जीवन व विचारधारा की छाप नहीं पड़ी? आश्चर्य की बात तो यह है कि विश्व प्रसिद्ध कहानीकार सुदर्शन जी के अभिन्न हृदय मित्र प्रेमचन्द जी को ऐसे प्रस्तुत किया जा रहा है मानो कि वे आर्य समाज से परिचित ही नहीं थे। आन्ध्र के प्रो.रंगा, बंगाल के क्रान्तिकारी श्री चक्रवर्ती, केरल के श्री मन्नम, तमिलनाडु के श्री सत्यमूर्ति जी तो निःसंकोच ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द व आर्यसमाज का अपने जीवन पर प्रत्यक्ष व परोक्ष प्रभाव स्वीकार करते रहे, जब कि इन प्रदेशों में आर्य समाज का प्रभाव अधिक नहीं था। उत्तर प्रदेश में जन्मे पले मुंशी प्रेमचन्द जिनका कार्यक्षेत्र भी मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश ही रहा, उनके जीवन को आर्य समाज से अप्रभावित चित्रित करना सत्य का गला घोंटने जैसी बात है। जिस महान् मनीषी प्रेमचन्द को आर्य समाज के अपने मासिक सदस्यता शुल्क की चिन्ता बनी रहती थी, उसे आर्य समाज से दूर करने का पाप किया जाता रहा है।

हाँ! एक शोधकर्ता जिसने प्रेमचन्द जी पर पी-एच.डी. किया है उसके शोध का विषय ही 'मुंशी प्रेमचन्द के साहित्य पर आर्य समाज का प्रभाव' है। परन्तु यह शोध अभी तक प्रकाशित ही नहीं हुआ है।

आज से कोई पचास वर्ष पूर्व हमें मुंशी प्रेमचन्द जी की एक कहानी का कुछ पता चला। इस कहानी का विषय ही महर्षि दयानन्द है। इसके आरम्भिक पैरा से ही पाठकों को मुंशी प्रेमचन्द के जीवन पर ऋषि दयानन्द जी के पावन चरित की अमिट छाप का ज्ञान होता है। मुंशी जी भाव भरित हृदय से, बड़ी श्रद्धा व उदारता से अपने आपको उस बालब्रह्मचारी यति योगी ऋषि का ऋणी मानते हैं।

हमने कोई अड़तीस वर्ष पूर्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक, विचारक व हिन्दी साहित्य सेवी डॉ.सत्यप्रकाश जी को इस कहानी के बारे में बताया तो वे गद्गद् होकर बोले कि इस उर्दू कहानी को शीघ्र अनूदित करके छपवा दो, मैं भी सहयोग करूँगा। कहानीकार से उनका परिचय था ही। वे उनके पूज्य पिता महान् दार्शनिक और यशस्वी साहित्यकार पं.गंगा प्रसाद

उपाध्याय के सहपाठी भी तो थे। हम भी इस कहानी के महत्व को समझते थे परन्तु अपनी अन्य व्यस्तताओं में यह कार्य भी भूल गया और कहानी भी खो गई। सौभाग्य ही जानिये कि इतना स्पष्ट याद रहा कि कहानी किस पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। प्रकाशन का वर्ष, सन्, संवत् तो भूल गया।

स्वामी सत्यप्रकाश जी की कर्मभूमि तो प्रयागराज थी और हमारे साहित्यिक पिता पूज्य पं.गंगा प्रसाद जी की नगरी भी प्रयाग थी। सो हमने इसका अनुवाद आर्य समाज मन्दिर कटरा प्रयाग में स्वामी जी के कक्ष में ही बैठकर किया। लगभग अनुवाद का कार्य वहीं कर दिया, थोड़ा अधूरा जो रहा वह घर आकर पूरा कर दिया।

कहानी के पुनर्मिलन और अनुवाद के साथ साथ हमने मुंशी प्रेमचन्द जी के बारे में नये सिरे से कुछ सघन खोज आरम्भ कर दी। इस कार्य में हमें एक वयोवृद्ध साहित्यप्रेमी और समाजसेवी श्री हरिश्चन्द्र जी श्रीवास्तव मुंबई ने विशेष सहयोग किया। आप मुंशी प्रेमचन्द जी व पं.गंगाप्रसाद उपाध्याय जी दोनों के ही बाल्यकाल से बड़े 'फैन' (भक्त-दीवाने) रहे हैं।

मुंशी प्रेमचन्द जी कभी हमीरपुर उ.प्र. के राजकीय विद्यालय के प्रधान अध्यापक होकर आए तो हरिश्चन्द्र जी के परिवार से आपका घनिष्ठ संबन्ध हो गया। हरिश्चन्द्र जी के पिता श्री बाबू महादेव प्रसाद जी व अन्य आर्य सज्जनों को साथ लेकर मुंशी जी ने तब वहां आर्यसमाज व आर्यपुत्री पाठशाला की स्थापना की। तब आप धनपत राय के नाम से जाने जाते थे। हरिश्चन्द्र जी के मामा बाबू जंगबहादुर आपके प्रिय विद्यार्थी थे।

आप में विधवा विवाह के लिए बड़ा उत्साह व जोश था। प्रेमचन्द जी का परिवार आर्यसमाज से जुड़ा रहा अथवा नहीं यह बात तो दूसरी है परन्तु विधवा स्त्री से विवाह करने का साहस उनको आर्य समाज से ही प्राप्त हुआ। इसे कौन झुठला सकता है? ऋषि दयानन्द की विचारधारा के गहरे प्रभाव के कारण ही, वे उस अन्धकारमय युग में यह क्रान्तिकारी पग उठा सके। बहुत कम लोगों को इस बात का पता होगा कि प्रेमचन्द जी के परिवार में एक विधर्मी देवी को बहू के रूप में अपनाया गया। यह ऋषि दयानन्द की छाप का ही एक और उदाहरण है। आपकी कहानियों में आर्यसमाज की विचारधारा की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। जातिवाद, फलित ज्योतिष, मूर्तिपूजा पर आप अपनी कहानियों में कड़े प्रहार करते रहे। ऋषि दयानन्द का कर्मण्यता का, पुरुषार्थ परमार्थ का दर्शन, स्वदेश- प्रेम आपकी कहानियों के मुख्य विषयों में से कुछ हैं। पाप क्षमा नहीं होते, कर्मों का फल अवश्य मिलता है- इस विषय पर भी कुछ कहानियाँ लिखीं।

राजेन्द्र जिज्ञासु

कभी लाहौर से आपकी उर्दू कहानियों का एक संग्रह 'देहाती कहानियाँ' के नाम से छपता था। इन सब कहानियों में ऋषि विचारधारा ओतप्रोत है।

मुंशी प्रेमचन्द जी पर लेखनी उठाने वालों ने 'ज़माना', 'हंस', व 'माधुरी' आदि पत्रों की चर्चा तो की है। निश्चय ही इनकी चर्चा तो होनी ही चाहिए थी परन्तु क्या यह घोर ज्ञान घोटाला नहीं कि हमारे देश के इन स्कालरों ने साप्ताहिक

शेष पृष्ठ 3 पर.....

विनय पीयूष

शिवतम रस का पान कराओ !

यो वो शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः
उशतीरिव मातरः।।

(अथर्ववेद 1/5/2)

और अधिक मत देर लगाओ !
जैसे माँ रस-
पान कराएं;
मंगल चाहें,
स्नेह लुटायें।
प्रिय, जो तुम्हारा शिवतम रस है,
उसका हमको पान कराओ!

काव्यानुवाद : अमृत खरे

thearyasamaj.org

सम्पादकीय

नमस्ते का प्रत्यक्ष प्रभाव

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा सांसदों को चरण स्पर्श की प्रवृत्ति का परित्याग करते हुए पदोन्नति के लिए सच्चाई, श्रम और साधना को जीवन में उतारने का संदेश दिया है। जबकि देशवासियों के समक्ष अभिवादन के रूप में 'नमस्ते' का व्यावहारिक, तर्कसंगत और विवेक सम्मत माध्यम मौजूद है, फिर इधर उधर भटकने की जरूरत ही क्या है? चरण स्पर्श प्रवृत्ति के दुरुपयोग के अनेक उदाहरण हमारे समक्ष मौजूद हैं। कविश्रेष्ठ श्री अनूप शर्मा (स्मृतिशेष) जिन दिनों धामपुर (बिजनौर) के एक कालेज में शिक्षक थे तो उन्होंने एक प्रधानाध्यापक द्वारा प्रबंधक महोदय (मैनेजर) के पैर छूने की प्रवृत्ति को लेकर एक छंद लिखा था-

'हेड टीचरी' सौंपी गई है तुम्हें,
चहै नीक करौ, चहै नागा करौ,
कुर्सी पर बैठिबो आवति है
चहै सोया करौ, चहै जागा करौ,
रसरी को तो बाँटिबो जानति हौ,
चहै मोटि करौ, चहै धागा करौ,
मुलु हाय, ललाजू, मनेजर के
अरराय कै पाँव न लागा करौ ।

ज्यादातर पैर छूने वालों के हाथ अभिवादनीय के पैरों तक पहुँचते ही नहीं। प्रायः मात्र घुटनों तक पहुँचकर रह जाते हैं। आधुनिक नारियाँ चुस्त कपड़ों की वजह से झुक नहीं पातीं। नई नवेली बहुओं के हाथ सासु ससुर इत्यादि पूज्य जनों के पैरों तक पहुँचने की प्रक्रिया के दौरान बीच में ही अटक कर रह जाते हैं। वे जमान लद गये; जब बहुएँ अपनी सासु के चरण ही नहीं छूती थीं, वरन् उन्हें दबाया भी करती थीं।

चरण स्पर्श की चर्चा में कई अनुभव याद आते हैं। छात्रावस्था में कई गुरुजन ऐसे थे जो पैर न छूने वाले शिष्यों से प्रसन्न नहीं रहते थे। दो आचार्य ऐसे भी मिले जो अब्राह्मण छात्रों से पैर छुआना पाप मानते थे। एक गुरुवर- डॉ. सरयू प्रसाद अग्रवाल का अनुभव भी कम चौंकाने वाला नहीं है। वे कुछ समय लखनऊ विश्वविद्यालय के डीन फैकल्टी आफ आर्ट्स भी रहे। गुरुवर के पास वि.वि. के छात्र अक्सर आते और उनके चरण स्पर्श करते। मैंने एक दिन यह देखकर कहा- 'डॉक्टर साहब! आज भी छात्रों में गुरु के प्रति कितनी श्रद्धा भावना है!' अग्रवाल साहब ने कहा- 'इनमें से कई तो पैर में चिकोटी काटने आते हैं।' पैर छूने की इस प्रवृत्ति ने हादसों को भी जन्म दिया है। श्री राजीव गाँधी के निकट पैर छूने के बहाने पहुँचने वाले मानव बम गये और उनकी मृत्यु का कारण बने। यह कृतघ्नता की पराकाष्ठा है। किसी के माथे पर यह नहीं लिखा होता है कि वह दुरात्मा है अथवा धर्मात्मा। घटना घटित होने के बाद पछताना ही हाथ लगता है।

इन सभी विषमताओं से बचने का एकमात्र मार्ग है- 'नमस्ते' को राष्ट्रीय अभिवादन घोषित किया जाय। जिसमें श्रद्धा भावना अपने समग्र रूप में अभिव्यक्त होती है; न कोई खतरा, न पछतावा। फिर भी यदि माता, पिता, आचार्य के चरण स्पर्श करें तो भी दोनों हाथ जोड़कर नमस्ते अवश्य कहें।

मेरे पिताजी- स्वनामधन्य पं.देवदत्त त्रिपाठी आयुर्वेदाचार्य, (ग्राम-गोनी, जिला-हरदोई) जो कि एक ख्यातिलब्ध चिकित्सक, संस्कृत के विद्वान् तथा स्थानीय आर्य समाज के प्रधान थे, नित्य प्रातः जब घर के बाहर बैठकर कुल्ला, दातून किया करते थे- तो अक्सर उनके मिलने बकरीदी मियां आया करते थे। गोंडवा निवासी बकरीदी मियां, कपड़े की दूकान करते थे; पांच वक्त नमाज़ पढ़ते थे, हृष्ट पुष्ट, गठा हुआ शरीर, साँवला रंग, चेहरे पर बहुत बड़ी आकर्षक दाढ़ी रखते थे। बकरीदी मियां की दाढ़ी सर सैयद अहमद खाँ से बहुत मिलती जुलती थी। नित्य जब आते तो ऊँची आवाज में पुकारते- 'पंडित जी, नमस्ते!' 'नमस्ते, आइए, बकरीदी मियां।' बकरीदी मियां की 'नमस्ते' कहने की शैली ने मुझे भी आकृष्ट किया। उन्हें आते देखकर पुकार उठता था-'चाचा जी, नमस्ते।' बड़ा अच्छा लगता था। कक्कू ने जिस नमस्ते की शिक्षा दी थी, उसे पुख्ता किया था बकरीदी मियां ने। यदि बकरीदी मियां के रास्ते पर चलने वालों को नेताओं ने प्रोत्साहित किया होता तो आज देश में साम्प्रदायिक दंगे नहीं होते! जायसी, रसखान, रहीम, रसूल की परम्परा विकसित हुई होती। किन्तु हमारे कर्णधारों ने विकासशील गुलशन को बर्बाद कर दिया। सारी ताकत सम्प्रदायवाद को हवा देने में लगा दी।

गुड मार्निंग, गुड नून, गुड इवनिंग- जैसे शब्दों में तो अभिवादन का अर्थ देने वाला कोई शब्द है ही नहीं, अन्य प्रचलित अभिवादनपरक शब्द भारत की शताब्दियों पुरानी संस्कृति से कोई संबन्ध नहीं रखते! वे महज हमारी दासता कया गुलामी की घड़ियों की याद भर दिला सकते हैं- किन्तु 'नमस्ते' एक ऐसा पवित्र और भावबोधक शब्द है जो सरल, सुबोध और सरस होकर पूर्णता का सन्तोष प्रदान करता है। यह शब्द ईसाई, मुस्लिम, पारसी तथा हिन्दू समाज को अभिन्न अंग जैन, बौद्ध, सिख इत्यादि सभी को प्रिय है। राजस्थान के प्रसिद्ध कवि श्री प्रकाशचन्द्र कविरत्न ने अपने एक गीत में कहा था-

अभिमान द्वेष मन में, किसी से कभी न हो,
जब जब मिलो 'प्रकाश' बड़े प्रेम से कहा-
नमस्ते महाशय, नमस्ते महाशय,
माँ भारती की जय, माँ भारती की जय!

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१५०

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में सप्तम समुल्लास का अंश

ईश्वर सिद्धि

क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः॥ *योग सूत्र।।*

जो अविद्यादि क्लेश, कुशल अकुशल, इष्ट, अनिष्ट और मिश्र फलदायक कर्मों की वासना से रहित है वह सब जीवों से विशेष ईश्वर कहाता है।

प्रश्न - ईश्वरासिद्धेः॥१॥
प्रमाणाभावान्न तत्सिद्धिः॥२॥
सम्बन्धाभावान्नानुमानम्॥३॥ *सांख्य सूत्र।।*

प्रत्यक्ष से ईश्वर की सिद्धि नहीं होती।।१।। क्योंकि जब उसकी सिद्धि में प्रत्यक्ष ही नहीं तो अनुमानादि प्रमाण नहीं घट सकते।।२।। और व्याप्ति सम्बन्ध न होने से अनुमान भी नहीं हो सकता। पुनः प्रत्यक्षानुमान के न होने से शब्दप्रमाण आदि भी नहीं घट सकते। इस कारण ईश्वर की सिद्धि नहीं हो सकती।।३।।

(उत्तर) यहां ईश्र की सिद्धि में प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है और न ईश्वर जगत् का उपादान कारण है। और पुरुष से विलक्षण अर्थात् सर्वत्र पूर्ण होने से परमात्मा का नाम पुरुष और शरीर में शयन करने से जीव का भी नाम पुरुष है। क्योंकि इसी प्रकरण में कहा है-

प्रधानशक्तियोगाच्चेत्संगापत्तिः॥१॥
सत्तामात्राच्चेत्सर्वैश्वर्य्यम्॥२॥
श्रुतिरपि प्रधानकार्य्यत्वस्य॥३॥ *सांख्य सूत्र।।*

यदि पुरुष को प्रधानशक्ति का योग हो तो पुरुष में संगापत्ति हो जाय। अर्थात् जैसे प्रकृति सूक्ष्म से मिलकर

कार्यरूप में संगत हुई है वैसे परमेश्वर भी स्थूल हो जाय। इसलिये परमेश्वर जगत् का उपादान कारण नहीं किन्तु निमित्त कारण है।।१।। जो चेतन से जगत् की उत्पत्ति हो तो जैसा परमेश्वर समग्रैश्वर्ययुक्त है वैसा संसार में भी सर्वैश्वर्य का योग होना चाहिये, सो नहीं है। इसलिये परमेश्वर जगत् का उपादान कारण नहीं किन्तु निमित्त कारण है।।२।। क्योंकि उपनिषद् भी प्रधान ही को जगत् का उपादान कारण कहती है।।३।। जैसे-

अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां बह्वीः प्रजाः सृजमानां स्वरूपाः॥

यह श्वेताश्वतर उपनिषद् का वचन है-जो जन्मरहित सत्त्व, रज, तमोगुणरूप प्रकृति है वही स्वरूपाकार से बहुत प्रजारूप हो जाती है अर्थात् प्रकृति परिणामिनी होने से अवस्थान्तर हो जाती है और पुरुष अपरिणामी होने से वह अवस्थान्तर होकर दूसरे रूप में कभी प्राप्त नहीं होता, सदा कूटस्थ निर्विकार रहता है और प्रकृति सृष्टि में सविकार और प्रलय में निर्विकार रहती है।

इसलिये जो कोई कपिलाचार्य को अनीश्वरवादी कहता है जानो वही अनीश्वरवादी है, कपिलाचार्य नहीं। तथा मीमांसा का धर्म धर्मी से ईश्वर। वैशेषिक और न्याय भी 'आत्म' शब्द से अनीश्वर वादी नहीं। क्योंकि सर्वज्ञत्वादि धर्मयुक्त और 'अतति सर्वत्र व्याप्नोतीत्यात्मा' जो सर्वत्र व्यापक और सर्वज्ञादि धर्मयुक्त सब जीवों का आत्मा है उसको मीमांसा वैशेषिक और न्याय ईश्वर मानते हैं।

(क्रमशः)

वेदांजलि

सद्विचारों के प्रचारक बनो

❑ पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

देव सवितः प्र सुव यज्ञं प्र सुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।।
-यजुर्वेद 30/1

शब्दार्थ-

हे (**देव**) दिव्यगुणयुक्त प्रभो! (**सवितः**) समस्त ऐश्वर्य से युक्त और जगत् को उत्पन्न करनेवाले जगदीश्वर! (**दिव्यः**) विशेष गुणयुक्त (**गन्धर्वः**) वाणी और पृथिवी को धारण करनेवाले (**केतपूः**) ज्ञान से अपने को पवित्र करनेवाले (**नः**) हमारी (**केतम्**) बुद्धि को (**पुनातु**) पवित्र कीजिये। (**वाचस्पतिः**) वाणी को (**स्वदतु**) माधुर्य से युक्त करे। (**यज्ञपतिम्**) शुभकर्मों के रक्षक को (**भगाय**) ऐश्वर्ययुक्त धन के लिए (**प्रसुव**) उत्पन्न कीजिये (**यज्ञम्**) शुभकर्म की (**प्रसुव**) प्रेरणा कीजिये।

व्याख्या-

इस मंत्र में भगवान् से चार प्रार्थनाएँ की गई हैं।

पहली-**'यज्ञं प्रसुव'**-'प्रत्येक मनुष्य के हृदय में शुभकर्म करने की प्रेरणा कर।' दूसरी-**'यज्ञपतिं प्रसुव'**-'जो शुभ कर्म करनेवाले हैं, उनके उत्साह को बढ़ाओ!' तीसरी-**'दिव्यः गन्धर्वः'**-'दिव्य वाणी को धारण करनेवाले' और **'केतपूः'**-'जिन्होंने ज्ञान से अपने आपको पवित्र किया है' **'नः केतं पुनातु'**-'हम भूले-भटकों को मार्ग बतावें।' चौथी-**'वाचस्पतिः नः वाचं स्वदतु'**-'वाणी के स्वामी हमारी वाणी को माधुर्य से युक्त बनावें।

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने जहाँ धार्मिक क्षेत्र की अनेक बुराइयों का सुधार किया, वहाँ स्तुति, प्रार्थना और उपासना के नाम पर जो धाँधली चल रही थी, उसका भी वास्तविक स्वरूप हमारे समक्ष रक्खा। मध्यकाल में प्रार्थना करने वाला भक्त अपने दुःख को दूर करने की, सम्पत्ति और ऐश्वर्य माँगने की, अपने शत्रु के विनाश आदि की एक लम्बी फेहरिस्त भगवान् के सामने पेश करके अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेता था। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में प्रार्थना का विश्लेषण करते हुए समझाया कि प्रार्थना प्राणिमात्र और मनुष्यमात्र की सुख समृद्धि के लिए करनी चाहिए; दूसरे के विनाश की अथवा पीड़ा देने की नहीं। प्रार्थी को भगवान से प्रार्थना के साथ-साथ अपने प्रार्थित अभिप्राय की पूर्ति के लिए अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार स्वयं पुरुषार्थ करना चाहिए, तभी भगवान् भी सहायता करते हैं।

ऋषि द्वारा प्रदत्त इस प्रकाश में, मंत्र में वर्णित इन चार प्रार्थनाओं का भाव यह निकला कि संसार को सुखधाम बनाने के लिए हममें से प्रत्येक व्यक्ति के चार कर्तव्य हैं।

पहला यह कि प्रत्येक व्यक्ति को सद्विचारों का प्रचार करना चाहिए। दूसरा यह कि अच्छे काम करने वाले धर्मात्माओं के काम की प्रशंसा करके उनका उत्साह बढ़ाना चाहिए। तीसरा यह कि जो-जो हम जानते जावें उस पर पूरी आस्था और दृढ़ता के साथ आचरण आरम्भ कर देना चाहिए। चौथा यह कि मनीषी अनुभवियों से मधुर भाषण की शिक्षा लेकर हमें इस प्रकार की वाणी बोलनी चाहिए, जिसे सुनकर व्याकुल और विक्षुब्ध व्यक्ति भी शान्ति लाभ करें।

सत्-ज्ञान का प्रचार उसी प्रकार का पुनीत कर्म है, जैसे नेत्रहीन व्यक्ति को खाई-खन्दक से बचाकर ठीक मार्ग पर चलाना। कोई साधारण व्यक्ति भी ऐसा नहीं मिलेगा जो अपनी आँखों के आगे किसी अन्धे को खाई-खन्दक अथवा कुँए में गिरने दे। आवश्यक से आवश्यक काम छोड़कर सामान्य व्यक्ति भी दृष्टि हीन व्यक्ति को संभालता है और ऐसा करने पर सन्तोष का अनुभव करता है कि मैंने एक अच्छा काम किया है। इस प्रवृत्ति के धर्म-भीरुओं से पूछना चाहिए कि एक व्यक्ति चक्षुओं के अभाव में खन्दक में गिरनेवाला है, जहाँ उसकी मृत्यु हो सकती है। आप उसे बचाना तो अपना पवित्र धर्म मानते हैं, किन्तु एक व्यक्ति ज्ञानरूपी आँख के अभाव में पाप के कुँए में गिरने जा रहा है और आप जानते हुए भी उसे नहीं समझाते तो आपसे यह उसी प्रकार का भयंकर पाप हो गया जैसे आपके देखते अन्धा कुँए में गिर कर मर जाय। उस दुनियावी कुँए में गिरने से तो एक जीवन ही नष्ट होता, किन्तु पाप-कूप में गिरकर तो उसके अनेक जन्म बिगड़ सकते हैं। अतः ज्ञान का प्रचार मनुष्य का एकपवि. कर्त्तव्य है।

मंत्र की दूसरी बात है शुभकर्म करने वालों के सद्गुणों की सराहना करके उनका उत्साह बढ़ाना चाहिए। इससे वे और उमंग से काम करेंगे तथा अन्य सामान्य व्यक्ति भी उनके यश और गौरव को देखकर शुभकर्म करने की प्रेरणा लेंगे। इसके विपरीत, यदि उनकी प्रशंसा न करके डाह और जलन से उन पर मिथ्या दोषारोपण करके उनकी टाँग खींचेंगे तो इससे समाज की बहुत बड़ी हानि यह होगी कि लोग भलाई करने से कतरायेंगे और परिणामस्वरूप अच्छाई के प्रचार का मार्ग अवरुद्ध हो जाएगा।

मंत्र की तीसरी बातय है कि ज्ञान को अपने आचरण का अंग बनाकर ही दूसरों को उपदेश देना चाहिए, तभी कथन का प्रभाव होता है। यदि स्थिति इसके विपरीत हो तो उसका फल सन्तोष प्रद नहीं होगा।

मंत्र की चौथी और अंतिम बात है- हम वाणी को वश में रखके उसका इस प्रकार प्रयोग करें कि सब ओर आनन्द और माधुर्य की वृद्धि हो।

(शेष पृष्ठ 3 पर.....)

thearyasamaj.org

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-७३

भवेत्कश्चित्त्वत्तोऽप्यधिकबलधारी द्युतिधर
स्तपस्वी योगी वा परमरमणीयो भवतु सः।
विमुग्धं मे चित्तं त्वयि तु निरपेक्षं स्पृहयति
परार्थे जीवन् त्वं प्रवदसि तदेव प्रकुरुषे।।

तुमसे भी अधिक बलशाली
चमकीला, तपस्वी योगी और
परम रमणीय है तो
हुआ करे !
मेरा मन तो केवल
तुम्हीं पर मोहित है, मुग्ध है !!
बिना किसी अपेक्षा के
केवल तुम्हारी स्पृहा करता है !!!
तुम दूसरों के लिए जी कर
जो कुछ भी करते हो,
पूरी शक्ति के साथ करते हो और
जो कहते हो, वही करते हो।

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

पुण्य स्मरण

आर्य लोक वार्ता स्मृति सम्मान के पुरोधा-4

स्व.बाबू मिश्रीलाल आर्य

(स्वामी आत्मबोध सरस्वती द्वारा अपनी मृत्यु से दो दिन पूर्व लिखित)

आर्य जगत के कर्मठ कार्यकर्ताओं की सूची में श्री मिश्रीलाल जी आर्य का नाम सदा अमर रहेगा। उनका व्यक्तित्व अनूठा था। आर्यसमाज टाण्डा (उ.प्र.) के वह पर्याय थे। उनके द्वारा संचालित आर्य कन्या महाविद्यालय, टाण्डा देश के गिने चुने विद्यालयों में से एक है। यहां की छात्राओं को प्रतिदिन नियमितरूप से संध्योपासन तथा साप्ताहिक यज्ञ में सम्मिलित होना अनिवार्य है। यह स्थिति यहां के विद्यालय की तब की है जबकि इसमें शिक्षा प्राप्त करने वाली अधिकांश छात्राएं मुसलिम परिवारों की हैं। वहां के मुसलिम भाइयों का यह दृढ़ विश्वास है कि वहां उनके पुत्रियों की असमत (पवित्रता) सुरक्षित है। यह आर्यसमाज के क्रियाकलाप की दिग्विजय है, जिस पर प्रत्येक आर्य को गर्व है। यह सब जिस व्यक्ति की तपस्या का फल है उनके जन्मशती समारोह पर हम अपनी पुष्पांजलि अर्पित करते हैं और उनके परिवार के प्रति श्रद्धा की भावना व्यक्त करते हैं। पूज्य माताजी (महाशय मिश्रीलाल जी की धर्मपत्नी) को नमन करते हैं और उनके दीर्घायु और स्वस्थ जीवन की प्रभु से याचना करते हैं। यह हर्ष और सन्तोष का विषय है कि उनके सुपुत्र श्री आनन्द कुमार आर्य अपने पूज्य पिता के चरण चिन्हों पर चल रहे हैं और आर्यसमाज तथा विद्यालय के प्रति समर्पित हैं। हमारा आशीर्वाद सदा उनके साथ है। प्रभु उन्हें सपरिवार स्वस्थ एवं सानन्द रखें।

स्वामी आत्मबोध सरस्वती

(कालम 3 का शेष.....)

उसे केवल इस कारण से अपने कमरे में लटकाये हुए हूँ कि स्वामी जी के जीवन का उच्च व पवित्र आचरण सदा मेरे नयनों के सम्मुख रहे। जिस घड़ी सांसारिक लोगों के व्यवहार से मेरा मन ऊब जाये, जिस समय प्रलोभनों के कारण पग डगमगायें अथवा प्रतिशोध की भावना मेरे मन में लहरें लेने लगे अथवी जीवन की कठिन राहें मेरे साहस व शौर्य की अग्नि को मन्द करने लगें, उस विकट वेला में उस पवित्र मोहिनी मूर्ति के दर्शनों से आकुल व्याकुल हृदय को शान्ति हो। दृढ़ता धीरज बने रहें। क्षमा व सहन शीलता के मार्ग पर पग चलते चलें तथा मैं अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि इस चित्र से मुझे लाभ पहुंचा है और एक बार नहीं कई बार।"

(पूरी कहानी के लिए लेखक द्वारा सम्पादित पुस्तक 'आपका चित्र', प्रकाशक-पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय प्रकाशन मंदिर, अम्बोहर(पंजाब) पढ़ें। 'आर्य लोक वार्ता' इस लेख के प्रकाशन हेतु प्रा.राजेन्द्र जिज्ञासु; जो आर्य समाज और हिन्दी साहित्य के प्रख्यात लेखक हैं, का हृदय से आभारी है। -सम्पादक)

(पृष्ठ 2 का शेष.....)

कथा सम्राट.....

'प्रकाश' उर्दू की कतई चर्चा नहीं की। 'आपकी तस्वीर' (आपका चित्र) यह कहानी इसी में प्रकाशित हुई थी। हम यह तो नहीं सोच सकते कि मात्र एक ही कहानी के लिए 'प्रकाश' का उल्लेख प्रेमचन्द जी की जीवनी में हो जाता। साहित्य के जागरूक पाठकों को यह जानकर अचम्भा नहीं होगा कि प्रेमचन्द जी 'प्रकाश' के लिए नियमित रूप से लिखा करते थे। प्रतिवष उनकी कई कहानियाँ 'प्रकाश' में प्रकाशित हुआ करती थीं।

'प्रकाश' कोई गुमनाम और महत्वहीन पत्र नहीं था। यह उर्दू पत्रकारिता के पितामह महाशय कृष्ण जी का साप्ताहिक था। भारत के स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में इसकी खूब चर्चा है। प्रसिद्ध आर्य प्रकाशक महाशय राजपाल भी इसी 'प्रकाश' के सहयक सम्पादक थे।

प्रेमचन्द के निधन पर किन्हीं और धार्मिक पत्रों ने सम्पादकीय टिप्पणियां लिखीं अथवा नहीं, यह तो वे लेखक गवेषक जानें जिन्होंने उन्हें मार्क्सवादी व गांधीवादी सिद्ध किया है परन्तु हम इतना जानते हैं कि आर्य सामाजिक पत्रों ने उनके देहान्त पर यह शोक समाचार अपने पाठकों तक अवश्य पहुंचाया। 'प्रकाश' में, जिसके वे एक मान्य लेखक थे, हमने उनके निधन पर सम्पादक की टिप्पणी सुरुचि से पढ़ी।

आर्यसमाज ने लाहौर व गुरुकुल कांगड़ी में प्रेमचन्द जी को सम्मानित करके स्वयं को भी गौरवान्वित किया। वे देश और मनुजता की एक महान् विभूति थे। उनकी इस कहानी के प्रकाश में आने से हिन्दी साहित्य समृद्ध हो रहा है। यह कहानी पाठकों को विशेष रूप से युवकों को एक नई दिशा देगी। आप के भोगवादी युग में सब ओर सत्ता व सम्पदा की पूजा हो रही है। प्रेमचन्द जी की इस कहानी का महत्व पहले भी कम नहीं था परन्तु आज के वातावरण में तो इसका महत्व और भी बढ़ गया है। ऋषि जीवन से प्रेरणा पाकर सत्ता व सम्पत्ति दोनों को ठोकर मारने की प्रेरणा देने वाली यह कहानी जन जन तक पहुंचाना सब सभ्य नागरिकों का कर्त्तव्य है। उक्त कहानी 'आपका चित्र' का प्रारंभिक अंश यहां इस प्रकार है-

"लोग मुझ से कहते हैं तुम भी मूर्ति-पूजक हो। तुम ने भी तो स्वामी दयानन्द का चित्र अपने कमरे में लटका रखा है। माना कि तुम उसे जल नहीं चढ़ाते हो। इसको भोग नहीं लगाते हो। घण्टा नहीं बजाते। उसे स्नान नहीं कराते। उसका शृंगार नहीं करते। उसका स्वांग नहीं बनाते। उसको नमन तो करते ही हो। उसकी (ऋषि दयानन्द) विचारधारा को तो सिर झुकाते हो, मानते ही हो (सरे तस्लीम तो झुकाते ही हो) कभी कभी माला व फूलों से भी उसका सम्मान करते हो। यह पूजा नहीं तो और क्या है?

उत्तर देता हूँ कि श्रीमन् इस आदर (ताज़ीम) व पूजा में अन्तर है। बहुत बड़ा अन्तर है। मैं उसे अपने कक्ष में इसलिए नहीं लटकाये हुए हूँ कि उसके दर्शन से मुझे मोक्ष की प्राप्ति होगी। मैं आवागमन के चक्कर से छूट जाऊँगा। उसके दर्शन मात्र से मेरे सारे पाप धुल जायेंगे अथवा मैं उसे प्रसन्न करके अपना अभियोग (Case) जीत जाऊँगा। अथवा शत्रु पर विजय प्राप्त कर लूंगा। वा किसी और ढंग से मेरा धार्मिक अथवा सांसारिक प्रयोजन सिद्ध हो सकेगा। मैं

(शेष कालम 1 व 2 पर...)

वाचनालय से

'सात साल के बच्चे को याद है पिछला जन्म, पत्नी को पहचाना' शीर्षक समाचार देते हुए **'दैनिक भास्कर'** लिखता है कि कुंडलका गाँव (अलवर) का सात साल का रजनीश, अचानक अपने आपको सवाई माधोपुर के शेरपुर गाँव का केदार कुम्हार बताने लगा और कहने लगा कि वहाँ पर मेरी पत्नी है, बच्चे हैं तो सब आश्चर्यचकित हो गये।...पिछले दिनों जब बालक ने अपने गाँव जाने की जिद की तो परिजनों ने शेरपुर गाँव से जानकारी हासिल की। बालक द्वारा बताये गये तथ्यों का पता लगाने के बाद रजनीश के पिता और परिवार के सदस्य उसे ८ जुलाई को शेरपुर-बिलचीपुर ले गये। जहाँ पर बालक ने जोगी महल और गणेश मन्दिर को पहचाना और अपने पिछले जन्म के परिजनों की पहचान भी कर ली।...गाँव के सरकारी स्कूल में दूसरी कक्षा में पढ़ रहा रजनीश गुर्जर स्कूल में भी अपने पूर्वजन्म की बातें बताता रहता है। बालक ने भास्कर से बातचीत में कहा कि शेरपुर में उसके पास दो गधे थे, जिससे किले पर मिट्टी ले जाने का काम करता था। बालक के परिजनों का दावा है कि सभी तथ्य जांच में सही पाये गये।...भारतीय दर्शन और धर्म के अनुसार पुनर्जन्म हो सकता है, लेकिन मेडिकल साइंस में दोबारा जन्म जैसी घटना को प्रमाणित करने का कोई ठोस तथ्य नहीं है।

'आई एस आई एस ने इराक में अब महिलाओं के लिये एक और फरमान सुनाया है' शीर्षक **'लोकतेज'** के समाचार के अनुसार आई एस आई एस ने उसके कब्जे वाले इराक में १४ से ४६ वर्ष तक की महिलाओं के खतने का फरमान सुनाया है।

गौरतलब है कि इराक के दूसरे सबसे बड़े शहर मोसल पर आतंकवादियों ने पिछले महीने कब्जा कर लिया था। इसके अलावा उत्तर-पश्चिम के कई अन्य इलाकों पर भी आतंकवादियों का कब्जा है। अब आतंकवादियों ने अपने कब्जे वाले इलाकों में अपना कट्टर एजेण्डा लागू करना शुरू कर दिया है।

इराक के कुछ सुदूर हिस्सों में तो महिलाओं का खतना अब भी किया जाता है, परन्तु सामान्य तौर पर इराक में यह एक असामान्य सी बात है।... आई एस आई एस के फतवे से इराक में करीब ४० लाख महिलाएं प्रभावित होंगी। एशिया, अफ्रीका और मिडिल ईस्ट के कुछ देशों में महिलाओं का खतना किया जाना अब भी आम बात है, लेकिन यह किशोरावस्था में ही किया जाता है। मोसल सहित इराक के कई हिस्सों पर कब्जा करने वाले आतंकी संगठन आई एस आई एस ने ऐलान किया था कि वे यहाँ इस्लामी राज्य की स्थापना करेंगे।

'पंजाब केसरी' के अनुसार आई एस आई एस ने मोसल में महिलाओं को हिजाब पहन कर चलने की हिदायत दी है। आतंकी संगठन ने इराक की राजधानी और सबसे बड़े शहर बगदाद की ओर कूच करने की भी धमकी दी है। आतंकी संगठन के मुताबिक महिलाओं के कपड़ों पर इस तरह का प्रतिबंध लगाना कपड़ों की वजह से होने वाली अय्याशी को रोकना है।....मोसल शहर की एक मस्जिद के मौलवी ने बताया कि आई एस आई एस के आतंकी ने उन्हें बन्दूक दिखाते हुए कहा कि आतंकी संगठन का यह फरमान लाउडस्पीकर पर पढ़ें। आई एस आई एस ने कहा कि शृंगार के चक्कर में प्रतिबंधों का पालन नहीं करने पर महिलाओं को बुरा अंजाम भुगतना पड़ सकता है। समाज को इसकी वजह से होने वाले नुकसान से बचाने और इस्लाम की अनिवार्यता को पूरा करने व अय्याशी से बचाने के लिये ऐसा करना जरूरी है।

अमेरिकी लेखक वेंडी डोनियर की किताब को बाजार से हटवाने के लिए प्रकाशक को मजबूर करने का आन्दोलन छेड़ने वाले कार्यकर्त्ता-लेखक दीनानाथ बत्रा अब इतिहास की किताबें बदलवाना चाहते हैं। **'नवभारत टाइम्स'** के अनुसार बत्रा ने इस सिलसिले में शिक्षा मंत्री स्मृति ईरानी से मुलाकात की और उनका दावा है कि ईरानी ने पूर सिलेबस में बदलाव की बात कही है।...बत्रा ने कहा ये किताबें मार्क्स और मैकाली की औलादों ने लिखी हैं और हमारी संस्कृति और जड़ों से जुड़ी नहीं हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्कूल में टीचर रह चुके बत्रा फरवरी में वेण्डी डोनियर की किताब 'द हिन्दूज : ऐन ऑल्टरनेटिव हिस्ट्री' पर मुकदमा कर दिया था। इस मुकदमें की वजह से प्रकाशक पेंग्विन ने किताब को वापस ले लिया था।

फिलीपींस के सूलू प्रान्त स्थित तालियो कस्बे में इस्लामी आतंकी समूह अबू सय्याफ के बंदूकधारियों ने सोलह ग्रामीणों की हत्या कर दी। मरने वालों में अधिक तर बच्चे और महिलाएं हैं। यह समाचार देते हुए **'दैनिक भास्कर'** लिखता है कि सूलू मुस्लिम बहुल प्रान्त है। सभी पीड़ित दो जीपों में सवार होकर रमजान खत्म होने और ईद मनाने के लिये दूसरे स्थान पर जा रहे थे। १९९१ से 'अबू सय्याफ' देश में कई आतंकी वारदातों को अंजाम दे चुका है। वह खुद को फिलीपींस का स्वतंत्र खलीफा घोषित कर चुका है।

'धर्म बदलो, धार्मिक कर दो या मारे जाओ' शीर्षक समाचार देते हुए **'नई दुनिया'** पत्र लिखता है कि इराक के मुस्लिम आतंकियों ने उत्तरी इराक में रहने वाली ईसाई आबादी को अल्टीमेटम दे दिया है। इसमें कहा गया है कि वे इस्लाम कबूल कर लें या धार्मिक कर जाजिया अदा करें या मौत का सामना करें।...मोसल के एक निवासी ने बताया कि यह बयान इराक के उत्तरी प्रान्त निनवेह में गुरुवार को बांटा गया और मस्जिदों में पढ़कर सुनाया गया।....मोसल में कभी एक लाख से अधिक ईसाई रहते थे, लेकिन हाल की घटनाओं के बाद शहर में मुश्किल से दो सौ ईसाई बचे हैं।

'इराक में आतंकवादियों ने सैकड़ों यजीदी महिलाओं को बन्धक बनाया' शीर्षक समाचार देते हुए **'हिन्दुस्तान'** लिखता है कि सुन्नी आतंकवादियों ने अनैतिक इरादे से यजीदी धार्मिक अल्पसंख्यक समूह की सैकड़ों महिलाओं को बंधक बना लिया है। इराकी मानवाधिकार मंत्रालय के प्रवक्ता कामिल अमीन ने बताया कि ३५ साल से कम उम्र की सैकड़ों यजीदी महिलाओं को इराक के दूसरे सबसे बड़े शहर मोसल में बंधक बनाकर रखा गया है। मंत्रालय को बंधकों के बारे में उनके परिवार से पता चला। अमीन ने कहा कि हमारा मानना है कि आतंकवादी उन्हें गुलाम मानते हैं और उनके मन में उनके प्रति गलत इरादे हैं। ●

thearyasamaj.org

शुभाकांक्षा

'आर्य्य लोक वार्ता' का माह जून जुलाई २०१४ का बहुअर्थी और बहुआयामी संयुक्तांक मिला। परस्पर अभिवादन हेतु 'नमस्ते' ही क्यों सर्वोत्तम, सर्वग्राही और उपयुक्त है इसका पूर्ण आध्यात्मिक और वैदिक आधार प्रमाणों के साथ पत्रिका के पृथम पृष्ठ पर ही प्रतिपादित किया गया है। श्री बांके बिहारी 'हर्ष' जी ने अपनी सूक्ष्म कविता के माध्यम से नमस्ते को सामाजिक एवं व्यवहारिक कसौटी पर सुन्दर शब्दों के समन्वय से सर्व स्वीकार्यता की ओर ले जाने का सफल प्रयास किया है।

डॉ.कैलाश निगम द्वारा रचित 'जीवन रत्न' और श्री नरेन्द्र भूषण द्वारा रचित 'तो कोई बात हुई' आदि कविताएँ न केवल सुरुचिपूर्ण हैं अपितु इनके अन्दर अच्छा सन्देश समाहित है जो अनुकरणीय है। श्री आनन्द कुमार जी का लेख 'मनुष्य का विराट रूप' सत्य, अहिंसा और प्रेम की महत्ता को रेखांकित करता है। यह समरसता और राष्ट्रीय एकता, अखण्डता और प्रगति हेतु अचूक उपदेश है। सम्पादकीय में व्यक्त विचार राजनीति और राजनेताओं की स्वार्थपरता, पद लोलुपता, नैतिक कंगाली और अविश्वसनीयता के बल मा.प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के उद्भव उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को अंधेरे में रोशनी की किरण की तरह प्रस्फुटित होते हुए इंगित किया है। यह अहम् और महत्वपूर्ण है। सुखद परिणामों की अपेक्षा है और प्रतीक्षा भी है।

--नरसिंह पाल
२०१, राजीव नगर, इन्दिरा नगर, लखनऊ

***

'आर्य्य लोक वार्ता' का जून-जुलाई संयुक्तांक प्राप्त हुआ। इसमें 'प्रसंगवश' के अन्तर्गत 'नमस्ते को राष्ट्रीय अभिवादन घोषित करें' लेख शोधपूर्ण और प्रेरक तथा समयानुकूल है। उत्साहवर्धन हेतु बहुत-बहुत आभार। पत्र स्थायी स्तम्भ 'मनुष्य का विराट रूप' और 'अनन्त की खोज' पढ़कर मनोरंजन के साथ ज्ञानवर्धन भी हुआ। 'शुभाकांक्षा' में लोगों की विद्वत्तापूर्ण समीक्षा पढ़कर अच्छा लगा। अगले अंक की प्रतीक्षा में-

-राजा भइया गुप्ता 'राजाभ'
बी२/३५६, सेक्टर-ए, जानकीपुरम, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता जून जुलाई अंक के प्रथम पृष्ठ पर 'नमस्ते' को राष्ट्रीय अभिवादन घोषित करें, बहुत उत्तम विचार है। पंडित अयोध्या प्रसाद जी ने 'थ्री एच' का अच्छा मनोवैज्ञानिक समाधान कर उज्ज्वल प्रकाश डाला है। 'नम' और 'ते' की संधि से सुन्दर शब्द बने 'नमस्ते' जैसे नम्र अभिवादन से स्वाभाविक प्रेम सत्कार प्रभाव होता है। सम्पादकीय में प्रथम प्रतिश्रुति में देश के राजनैतिक क्षेत्र की जो प्रथा रही है उसका हू ब हू दिग्दर्शन है। नरेन्द्र मोदी जी से देश की जनता को रामराज्य जैसी अपेक्षा है। यह तो समय ही बतायेगा क्योंकि देश का हर क्षेत्र बदहाल है। 'वेदांजलि' में पं.शिव कुमार शास्त्री ने मंत्र में बताया है कि गौ अति पावन है इसका हनन मत करो। साथ ही गौ

महिमा का सुन्दर वर्णन है। अत्यंत हितकारी है। अमृत खरे जी द्वारा 'वाचनालय से' से नई नई जानकारी प्राप्त होती रहती है। धारावाहिक 'मनुष्य का विराट रूप' में आत्मसुधार पर प्रकाश डाला गया है साथ ही सज्जनता के विकास के विषय में बताया गया है। इसके लिए आनन्द कुमार जी को बहुत धन्यवाद। 'अनन्त की खोज', आनन्द गिरि जी की महान खोज है। पंखे के दृष्टान्त से दर्शाया है कि हमारी परम्पराओं और रूढ़ियों को बनाकर हमारे देश को पूर्वनियोजित ढंग से हमारे पूर्वजों को असभ्य और जंगली सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया। 'काव्यायन' में सभी कविताएं विशेष महत्वपूर्ण हैं सभी का अपना स्थान है। फिर भी कैलाश निगम की कविता 'जीवन-रत्न' विशेष है। इसके अलावा राजा भइया गुप्त 'राजाभ' की कविता दर्शाती है कि आज देश को कैसे नेता की आवश्यकता है। बाँके बिहारी जी ने अपनी कविता में 'नमस्ते' अभिवादन की महान महिमा दर्शायी है। नमस्ते अभिवादन पर सराहनीय प्रकाश डाला है इसके लिए बहुत बहुत उन्हें साधुवाद।

-श्रीमती प्रमोद कुमारी
एम.एस.३७, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' को मैं हार्दिक

धन्यवाद देती हूँ, जिसके माध्यम से समय समय पर नयी सूचनाएँ और जानकारियाँ मिलती रहती हैं। श्रीमती कमल अग्रवाल के निधन का समाचार यदि 'आर्य लोक वार्ता' समाचार पत्र हमारी आर्य समाज में न आता रहता तो यह हमें नहीं मिल पाता। वस्तुतः आर्य समाज इन्दिरा नगर के प्रारंभिक दौर में कमल जी का विशेष सहयोग मिलता रहा। जब भी आवश्यकता पड़ती, उनके आवास पर सत्संग आयोजित होते रहते थे। उन्हीं के भूतनाथ मंदिर के पीछे इंदिरानगर जाने वाले मार्ग पर स्थित उनके आवास पर आयोजित सत्संग में ही मेरा डॉ.वेद प्रकाश आर्य से परिचय हुआ था। कमल जी योगविद्या की ज्ञाता थीं। मैं कमल जी को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ तथा ईश्वर से यह प्रार्थना करती हूँ कि वह उनके पति इं. जे.पी.अग्रवाल को वह शक्ति प्रदान करे, जिससे वे कमल जी के अभाव में भी वैदिक धर्म की सेवा करते रहें।

-श्रीमती कान्ति कुमार
आर्य समाज, इन्दिरा नगर, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' में प्रकाशित सम्पादकीय लेख एवं समाचार क्षरा मुझे श्रीमती कमल अग्रवाल के आकस्मिक निधन की खबर मिली। योग-शिक्षा में उनकी गहरी अभिरुचि थी और वे प्रायः भारतीय विद्या भवन विद्यालय में आकर बच्चों को योग-शिक्षा देती थीं। वस्तुतः उन्हीं के द्वारा मुझे 'आर्य लोक वार्ता' तथा इसके प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य का परिचय प्राप्त हुआ। परिचय के पश्चात् मेरे परिवार एवं विद्यालय में प्रायः कार्यक्रम, संस्कार इत्यादि वैदिक विधि से आचार्य डॉ.वेद प्रकाश जी द्वारा ही सम्पन्न होते रहे हैं। श्रीमती कमल अग्रवाल को मैं अपने परिवार के साथ श्रद्धासुमन अर्पित करती हूँ। आशा करती हूँ कि उनके पतिदेव इं.जे.पी.अग्रवाल वैदिक धर्म की सेवा में संलग्न रहेंगे तथा 'आर्य लोक वार्ता' को अपना सक्रिय सहयोग और आशीर्वाद प्रदान करते रहेंगे।

-श्रीमती मालती त्यागी, प्रिंसिपल,
भारतीय विद्या भवन, गोमतीनगर, लखनऊ

***

'आर्य्य लोक वार्ता' के सुभग संयुक्तांक

जून-जुलाई, २०१४ में प्रथम पृष्ठ पर 'नमस्ते' के महत्त्व एवं उपयोगिता पर इतना सारगर्भित एवं विस्तृत लेख बाँचकर ज्ञानवर्द्धन के साथ-साथ आनन्द प्राप्त हुआ। पं.शिव कुमार शास्त्री जी का लेख सटीक है। आनन्द कुमार जी का धारावाहिक 'मनुष्य का विराट् रूप' अपने ४४ 'एपीसोड' पूर्ण कर चुका है जिसके निमित्त उन्हें बधाई। आनन्द गिरि जी का आलेख 'अनन्त की खोज' वास्तव में ज्ञान, अध्यात्म एवं आनन्द का गिरि ही है। 'काव्यायन' स्तम्भ की कविताएँ प्रायशः गुनगुनाने योग्य हैं। अनेक महत्त्वपूर्ण समाचारों की भी जानकारी हुई।

आर्य्य लोक वार्ता मिला, खिले हृदय में फूल।
मानस सौरभमय हुआ, मौसम भी अनुकूल।।

-डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर
जी-०२, लोरपुर रेजीडेंसी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

***

मई मास २०१४ का आर्य लोक

वार्ता का अंक प्राप्त हुआ। सभी खण्ड पूर्व की भांति अत्यंत सुन्दर ज्ञानवर्द्धक पाये। मन हर्षित हुआ। मेरा ज्येष्ठ पुत्र कैप्टन हरीश खत्री संयोगवश मुम्बई से लखनऊ आया हुआ था। अंक को पढ़कर बहुत प्रसन्न हुआ तथा प्रति अपने साथ मुंबई ले गया। वहां परिवार के सदस्यों व अन्य लोगों ने भी यह पत्रिका पढ़कर प्रशंसा की। आर्य लोक वार्ता के सम्पादक एवं उनकी पूरी टीम का हार्दिक धन्यवाद। अंक के मुख्य पृष्ठ पर भारत के प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी के संबन्ध में लेख सामयिक परिवेश में जनमानस को आशावान करता है। मोदी जी का तप, देश प्रेम, पुरुषार्थ तथा देश के सभी वर्गों के प्रति सद्भावना सराहनीय है। देश वासियों का परस्पर सौहार्द व सहयोग यदि मिलता रहो तो यह राजनैतिक परिवर्तन अवश्य सफल होगा। सम्पादकी में 'यशोदा मातृशक्ति' शीर्षक लेख बहुत भावपूर्ण है। ऐतिहासिक पात्रों व कवियों का विवरण प्रेरणादायक है। महात्मा आनन्द गिरि की कृति 'अनन्त की खोज' में वर्ण व्यवस्था पर व्याख्यान जनमानस की रूढ़िवादी सोच में बदलाव को प्रेरित करता है। 'काव्यायन' में सभी कविताएं अत्यंत सुन्दर हैं। पं.ओजोमित्र शास्त्री की सरल संस्कृत कविता 'मोदी मोदयते' व डॉ.मिर्जा हसन नासिर की कविता 'आ गई मोदी लहर' बहुत रोचक लगी। सभी कवियों को साधुवाद। पत्रिका के अन्य खण्ड, आचार्य दीपंकर का 'दयानन्द चरितम' का संस्कृत काव्य, अमृत खरे का 'विनय पीयूष', उनका 'वाचनालय से' समाचार पत्रों/पत्रिकाओं का मंथन, सभी सामग्री गम्भीरता से पठनीय है। समाचारों में प्रसिद्ध वैदिक विदुषी डॉ. निष्ठा विद्यालंकार का श्री समीर कुमार एडवोकेट के साथ परिणय सूत्र में बंध जाने पर हार्दिक शुभकामनाएं व आशीर्वाद। मेरे प्रिय मित्र पं.मदन मोहन जोशी जी को आर्य समाज आदर्श नगर लखनऊ द्वारा प्रदत्त लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड तथा उनके पेस मेकर की सिलवर जुबली एवं चिकित्सालय द्वारा ७५ हजार रुपये की वापसी पर बधाई एवं उनके स्वास्थ्य लाभ के लिये शुभकामनाएं। मेरे स्नेही समाजसेवी श्री पाल प्रवीण के ७८वें जन्म दिवस पर एवं श्रीमती कमलेश पाल जी को आर्य लोक वार्ता सम्मान प्राप्ति के लिये बधाई एवं शुभकामनाएं।

-जगदीश लाल खत्री
'ध्रुव', ५००, हिन्द नगर, कानपुर मार्ग, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता जून-जुलाई अंक के अग्रलेख में 'नमस्ते' अत्यन्त सारगर्भित, सांस्कृतिक एवं समसामयिक लगा। वेद उपनिषद, पुराण आदि आर्ष ग्रन्थों से उद्धरण 'नमस्ते' को राष्ट्रीय अभिवादन घोषित करने के लिए प्रबल तथा पर्याप्त सिद्ध साक्ष्य हैं। इस प्रसंग में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रेरक सदाचरण भी अनुकरणीय हैं। खोजपूर्ण विषयप्रस्तुति हेतु आपको साधुवाद। प्रथम प्रतिश्रुति सम्पादकीय भी राजनेताओं के दोहरे चरित्र, पाखण्ड पूर्ण सदायशता तथा पदाभिमान की पोल खोलता है। ऐसे महाराजाओं से प्रजा को भला क्या आशाएं होंगी।

'वाचनालय से' मनीषी अमृत खरे के 'महा-भारतकालीन विमान मिला' समाचार ने रोमांचित कर दिया किन्तु दुःखद यह कि रहस्य पूर्णतः उद्घाटित नहीं हो सका और वह नष्ट हो गया। कुछ नहीं तो उसके छायाचित्र तो संजो लिए गए होंगे। कदाचित् आगे कुछ प्रकाश डाला जाए। 'वेदांजलि' में पवित्र गौ का हनन न करो- वेदों में स्पष्ट निर्देश है। हम गौ को माता कहते हैं किन्तु प्रतिदिन लाखों गायों का वध महान राजनेता और धर्माधिकारी रोक नहीं पा रहे अथवा रोकना नहीं चाहते। मां का करुण क्रन्दन सुनकर कदाचित् गोपाल आएं। भाई उमेश राही, नरेन्द्र भूषण के गीत तथा डा.कैलाश निगम एवं देवकीनन्दन शान्त की गजलें भावपूर्ण तथा हृदयस्पर्शी हैं। केदारनाथ सिंह के ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्ति पर उनकी कविता की प्रस्तुति समीचीन है। सभी के प्रति मंगलाशा अर्पित है। पन्द्रह अगस्त के पावन पर्व पर हार्दिक शुभाकांक्षाएँ।

शुभ हो पन्द्रह अगस्त!
जन-जन बलशाली बने आर्य, वैदिक संस्कृति पथ हो प्रशस्त्र।
फहरे गौरवान्वित ध्वज तिरंग, कोई नर-नारी हो न त्रस्त।
खल-कामी कुल का हो विनाश, हो अनय-पाप के दुर्ग ध्वस्त।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
११७, आदिलनगर, लखनऊ -२२६०२२

***

अक्षर लोक

राम साहित्य के विशेषज्ञ, अनुसन्धाता, कथाकार, कवि और बहुआयामी अनुवादक डा.रमानाथ त्रिपाठी 5 अगस्त 2014 को जीवन के यशस्वी 90वर्ष पूर्ण कर रहे हैं। इस अवसर पर आर्य लोक वार्ता अपने समस्त पाठक-परिवार के साथ डा .त्रिपाठी को हार्दिक बधाई भेजता है तथा उनके शतायु होने की शुभकामना करता है।

डा. त्रिपाठी दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग से सेवामुक्त होकर भारत भवन भोपाल की निराला पीठ के दो वर्ष तक निदेशक रहे। सेवामुक्ति के पश्चात भी डा. त्रिपाठी की लेखनी अबाधगति से चलती रही। उनका 'रामगाथा' उपन्यास राजपाल एंड संस, दिल्ली से प्रकाशित हुआ तथा लोकप्रियता के उच्च पादान तक पहुँचने में सफल रहा है। इधर **'जैनेन्द्र की कल्याणी, उत्कल की कुन्तला'** एक ललित खोज ग्रंथ साहित्य जगत का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर रखा है। इस ग्रंथ के संबन्ध में ओड़िया एवं हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार डा. अजय कुमार पटनायक लिखते हैं-

"कुन्तला कुमारी साबत ओड़िशा की एक लब्धप्रतिष्ठ कवयित्री एवं औपन्यासिका हैं। छायावाद के समधर्मा सबुजयुग को अपनी रोमैण्टिक एवं रहस्यवादी कविताओं में समृद्ध करने के साथ ही वे अपने संस्कारधर्मी सामजिक उपन्यासों से ओड़िआ साहित्य में अपनी छाप छोड़ गयीं। ओड़िआ में उन पर दो जीवनी-ग्रंथ; पद्य एवं गद्य पर अलग-अलग दो शोध-प्रबंध प्रस्तुत हुए। साथ ही पाठ्य-पुस्तकीय शैली में कई पुस्तिकाएँ रची गयीं। सब कुछ सामान्य था। अचानक 26 दिसम्बर, 1976 को 'धर्मयुग' में प्रकाशित डा.रमाबाथ त्रिपाठी के शोध-परक लेख- 'उत्कल की कुन्तला ही जैनेन्द्र की कल्याणी थी'- ने सबके कान खड़े कर दिये। ओड़िशा की साहित्यिक गोष्ठियों में सर्वत्र इसी की चर्चा छिड़ गई। साहित्य अकादमी से लेकर कई संस्थाओं और व्यक्तियों की ओर से 'कल्याणी' के ओड़िआ अनुवाद शुरू हो गये। हिन्दी में महादेवी वर्मा के पद्य और गद्य रचनाओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन कर दो शोध हुए।

अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि उस छोटे-से पौधे ने अब विशाल वट वृक्ष का रूप धारण कर लिया है। देश की राजधानी में रहकर रक्षणशील ओड़िआ लड़की का दिग्गज हिन्दी साहित्यकारों की साहित्यिक गतिविधियों के साथ जुड़ना आम पाठकों के लिए अविश्वसनीय बात थी। अब 'जैनेन्द्र की कल्याणी : उत्कल की कुन्तला' ग्रन्थ ने कुन्तला के व्यक्तित्व का एक और कपाट खोल दिया। जैनेन्द्र, यशपाल, चतुरसेन शास्त्री, अज्ञेय, लक्ष्मीनारायण मिश्र, विष्णु प्रभाकर, प्रभाकर माचवे सरीखे हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकारों ने कुन्तला के व्यक्तित्व को सराहा। यह न केवल कुन्तला के पाठकों के लिए, बल्कि तमाम शोध-कर्त्ताओं के लिए ललित शोध के रूप में शोध की एक नयी दिशा की ओर संकेत करता है। एक ईसाई परिवार में घर पर जगन्नाथ मन्दिर और पूजा-पाठ का होना हिन्दुस्तान की उदार समन्वय-प्रधान संस्कृति की सबसे बड़ी पहचान है। इन सबकी खोज कर इन्हें लोकार्पित करते हुए डा. रमानाथ त्रिपाठी ने जैसा अद्भुत कार्य किया है, उससे भारतीय साहित्य, संस्कृति तथा सद्भावना की एक नयी दिशा उन्मोचित हो गयी। मैं उनकी अदम्य निष्ठा, श्येनवत् शोधा-दृष्टि एवं उदार हृदयवत्ता के प्रति नतमस्तक हूँ।"

पुस्तक का मूल्य मात्र 180 रुपये है और यह पुस्तक अनिल प्रकाशन, 2619, न्यू मार्किट, नई सड़क, दिल्ली-110006 से प्रकाशित है। *(डॉ.रुक्मिणी, एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, पी.जी.डी.ए.वी.कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के सौजन्य से)*

thearyasamaj.org

धारावाहिक-(45)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

(ख) दूसरे प्रकार के लोग वे हैं जो अपनी आत्मदुर्बलता के कारण ठंडे पड़े रहते हैं और सबके सामने आत्मसमर्पण कर देते हैं। ऐसे व्यक्तियों की कमी नहीं है जो परिस्थितियों से विवश होकर, निर्धनता या शक्तिहीनता के कारण नम्र, सुशील प्रतीत होते हैं। एक नीतिकार के शब्दों में- अशक्तः सततं साधुः, कुरूपा च पतिव्रता। व्याधितो देवभक्तश्च, निर्धना ब्रह्मचारिणः।।

थोड़ा-बहुत समर्थ होते ही ऐसे लोग कबीर की इस उक्ति को चरितार्थ करने लगते हैं-

हम जाना तुम मगन हो, रहे प्रेम-रस पागि।
रंच पवन के लागते, उठे नाग से जागि।।

(ग) तीसरे प्रकार के कृत्रिम शिष्ट वे हैं जो स्वार्थ-सिद्धि के लिए दूसरों की चाटुकारिता करते हैं, ऊपरी भक्ति दिखाते हैं और बाह्य आडम्बर-दिखावटी व्यवहार से उन्हें मुग्ध बनाते हैं। पद, वेतन, पुरस्कार के लोभ से अथवा किसी प्रयोजन की सिद्धि के लिए लोग सौजन्य का मिथ्या विज्ञापन करते हैं। उनकी बनावटी शिष्टता में उनकी धूर्तता छिपी रहती है- 'मैत्री में विश्वासघात है, छल है छिपा उसकी विनय में'-पथिक। आजकल के कालनेमिगोत्रीय अवसरवादी बड़े शौक से बड़े लोगों को, मुख्यतः सरकारी अधिकारियों को, प्रीतिभोज देते हैं या चाय पिलाते हैं। ऊपर से तो वे बड़ा चाव प्रदर्शित करते हैं, लेकिन उनके हृदय को टटोलिये तो पता चलेगा कि उनका प्रीति-भोज वास्तव में स्वार्थ-भोज है और उनकी चाय वास्तव में चाह होती है। अपने साम्मान्य अतिथि के प्रति वे ऊपर से बड़ा सद्भाव दिखाते हैं, अपना सब-कुछ उनके लिए न्योछावर करने की कामना व्यक्त करते हैं, परन्तु उनके मन की बात सुनिए। उनका मन भीतर-ही-भीतर इस प्रकार बोलता हुआ मिलेगा- अतिथि देव, दानव की तरह खाइये- जी भरकर खाइये, भोग लगाकर मुझे आपसे वांछित वरदान लेना है; आप मेरे कामना-तरु हैं- आपको हरा भरा बनाकर मुझे आपसे फल लेना है, आपकी शुष्कता मिटाना है, आपसे शीघ्र ही नमक अदा कराना है; भोक्ताजी, मैं आपका पेट भारी बनाकर आपके विवेक को नष्ट करना चाहता हूँ; आपको कर्त्तव्य भ्रष्ट बनाना चाहता हूँ, आपको उल्लू बनाए बिना मेरा काम नहीं चलता; मैं। आपको भेंट नहीं दे पा रहा हूँ; आपका ईमान खरीद कर उसका दाम दे रहा हूँ; यह आपकी नहीं, आपकी कुर्सी और कलम की पूजा है।

अफसरों को इसी उद्देश्य से दावत दी जाती है। इसे आप दावत कहेंगे या अदावत? यह विनय है या अनय? इसका निर्णय स्वयं कीजिए।

(घ) चौथे प्रकार के कृत्रिम विनयी वे हैं जो बात-चीत से बड़े उदार और निस्पृह प्रकट होते हैं लेकिन व्यवहार से कपटी। वे किसी वस्तु की लेने की इच्छा नहीं प्रकट करते, उसे लिए बिना छोड़ते भी नहीं। यही आजकल का व्यावहारिक चातुर्य है। उन्हें शरबत या शराब पीने को दीजिए तो वे 'जी नहीं, जी नहीं' कहकर अपनी सुशीलता प्रकट करेंगे और यह कहकर कि अच्छा लाइए, आपकी बात कैसे टाली जाय, उसे अवश्य पी जायँगे।-'Tact is the art of refusing a drink without depriving thyself of it.' किसी वस्तु को लेते समय ऐसा भाव प्रकट करना क आप ही उसका उपकार कर रहे हैं- यह भी आजकल का व्यावहारिक चातुर्य है-'Tact is the art of receiving as if you were giving it.' तात्पर्य यह है कि नम्र बनकर लूटो- ऐसा लूटो कि लुटने वाले को उस समय बुरा न लगे- यही आधुनिक शील-सौजन्य है।

मिथ्या शिष्टाचार के इतने ही उदहरण पर्याप्त हैं। इस प्रकार के छल-कपटपूर्ण व्यवहार से सद्भावनाओं और सद्गुणों का विकास नहीं होता। ऊपर से चाहे जितना आकर्षक और सरस हो, इसके मूल में हिंसा, स्वार्थ-सिद्धि, शठता और वंचकता की भावनायें रहती हैं और वही फलती-फूलती हैं। ढोंग से ढोंग ही बढ़ता है। सद्व्यवहार के नाम से दुर्व्यवहार और सज्जनता के नाम से दुर्जनता का प्रचार हो रहा है। इसको शिष्टाचार नहीं कहा जा सकता। यह दुष्टाचार या भ्रष्टाचार है।

७-शिष्टाचार की कुछ उपयोगी बातें

शिष्टाचार केवल शब्दों से और ऊपरी व्यवहार से सफल नहीं होता। उसका अधिक सम्बन्ध हृदय से है। व्यावहारिक सरलता एवं सरसता के लिए आन्तरिक सरलता और सरसता चाहिए। प्रकृति की शुद्धता से कृति में भी शुद्धता आ जाती है। भीतर सद्भावना न होने से बाहर उसका प्रकाश नहीं फैल सकता। अतएव सर्वप्रथम अन्तर से शिष्ट-विशिष्ट होना आवश्यक है। सच्चे सौजन्य की सिद्धि के लिए जिन स्वाभाविक सद्गुणों की आवश्यकता होती है, उनमें से कुछ का निर्देश यहाँ किया जाता है-

(क) आत्मशासन :- जैसा कि ऊपर संकेत किया जा चुका है, शिष्ट-व्यवहार के लिए आत्मशासन की आवश्यकता होती है। महात्मा गांधी ने एक बार कहा था कि 'मन में जो आवेश आवे उसी के वशीभूत हा जाना हमें पश्चिमी सभ्यता सिखा रही है।' हमारी सभ्यता मन को सुसंयत करके मर्यादित आचरण करने का पाठ पढ़ाती है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने इन्द्रिय-दमन को ही विनय माना है। यही आत्मशासन है। यही कर्त्तव्य और यही धर्म है। स्वार्थ, प्रमाद को त्याग कर लोक मर्यादा के अनुकूल आचरण करने से शिष्टाचार सफल होता है। व्यास के मत से- जिनका धर्म निश्चित होता है, वे महात्मा शिष्टाचारी होते हैं- 'शिष्टाचारा महात्मानो येषां धर्मः सुनिश्चितः'-वनपर्व। और जो धर्म के अनुसार चलते हैं वे नित्य शिष्टाचारी होते हैं-'शिष्टाचारं निषेवन्ते नित्यं धर्ममनुव्रताः'-वनपर्व।

जितेन्द्रिय कर्त्तव्य-परायण ही विनयी, सुशील हो सकत हैं क्योंकि वे आत्म नियंत्रण में समर्थ होते हैं। असंयमी और प्रमादी तो मर्यादा का अतिक्रमण करते ही हैं। प्रत्येक अवस्था में औचित्य का ध्यान रखना सच्चा आत्मशासन है। इसका हम एक सुन्दर उदाहरण देते हैं। रघुवंश में महाकवि कालिदास ने लिखा है कि सीता-स्वयंवर के बाद परशुराम का धनुष चढ़ाकर राम ने 'क्षमा करो' ऐसा कहत हुए उनके चरणों पर अपना मस्तक रख दिया क्योंकि पराक्रम से जीते हुए विरोधियों में नम्र होना तेजस्वियों की कीर्ति बढ़ाने वाला होता है-

राघवोऽपि चरणौ तपोनिधे क्षम्यतामिति वदन्समस्पृशत्।
निर्जितेषु तरसा तरस्विनां शत्रुषु प्रणतिरेव कीर्तये।।

इसी को आत्मशासन कहते हैं। साधारण व्यक्ति तो उत्तेजितावस्था में आपे से बाहर होकर कर्त्तव्यच्युत हो जाता है। 'प्रभुता पाइ काहि मद नाहीं'- तुलसी। ऐसे ही अवसरों पर शिष्टाचार की रक्षा के लिए संयम की आवश्यकता होती है।

(ख) अहंकार का परित्यागः- अहंकार एक ऐसा दुर्गुण है जिससे शील-सौजन्य नष्ट हो जाता है। मन में अहंकार रहने पर मनुष्य दूसरों के सिर पर सवार हो जाना चाहता है। ऐसी दशा में वह दूसरों के साथ सद्व्यवहार कैसे करेगा? अहंकारी तो अपने अतिरिक्त किसी को कुछ समझता ही नहीं। वह दूसरों का अनादर करने पर ही उतारू रहता है। ममता और क्रोध के आवेश में उसे भला-बुरा कुछ नहीं सूझता। प्रायः छोटी छोटी बातों से भड़ककर वह उग्र रूप धारण कर लेता है। इसका परित्याग करके ही मनुष्य शिष्टाचारी हो सकता है।

अहंकार त्यागने का अर्थ यह है कि मनुष्य अपने को दूसरों से श्रेष्ठ एवं और दूसरों को अपने से तुच्छ एवं मूर्ख समझकर उसे अपमानित न करे; अधिकारी तथा धन-सम्पन्न होकर भी स्वामित्व का गर्व न प्रदर्शित करे; अल्पज्ञ होकर ज्ञादुर्विदग्ध न बने; छोटे मुँह बड़ी बात न करे और बड़प्पन का मोह त्याग दे।

(मनुष्य का विराट् रूप से साभार क्रमशः)

व्याख्यान माला (5)

अनन्त की खोज

-आनन्द गिरि-

जागरूक विचारक, समाजशास्त्री इन लक्षणों को देखकर चिन्तित हैं। किसी को भी यह नहीं सूझ रहा है कि इस अन्धकार से निकालने का रास्ता क्या है? यह समस्या केवल इस देश की समस्या नहीं है। संसार का प्रत्येक राष्ट्र सांस्कृतिक स्तर पर गिर रहा है। ऐन्द्रिक उत्तेजना की पशु वृति व्यापक होकर नैतिकता और आदर्शों की नवीन कुस्सित व्याख्या प्रस्तुत कर रही है। तर्क का ऐसा भयंकर दुष्प्रयोग मानव समाज के लिए विलक्षण बात है। फ्री सेक्स की माँग ने नयी पीढ़ी में विवाह के प्रति घृणा भर दी है। समलैंगिक मैथुन को कानूनी अनुमति दी जा रही है। राज्य गर्भपात और भ्रूण हत्या का समर्थन कर रहे हैं। मद्यपान शिष्टता का लक्षण मान लिया गया है तो दूसरी ओर अफीम, हिरोइन, एलएसडी परानुभूति के लिए लोकप्रिय हो रहे हैं। अश्लीलता कला का मुखौटा पहने घूम रही है और नग्नता रियलिटी के नाम से पुज रही है। राजनतिज्ञ और धार्मिक नेता सभी इस पतन को देख रहे हैं। राज-नेताओं ने तो परिस्थिति से प्रगति के नाम पर समझौता कर लिया है और धार्मिक नेता कलिकाल का आवश्यक प्रभाव मानकर चुप हैं। या उस अवतार की प्रतीक्षा में हैं जो आयेगा तथा धर्म की प्रतिष्ठा करेगा। इस उथल-पुथल को आर्थिक समस्या का नाम भी नहीं दिया जा सकता। अगर इसका कारण गरीबी होती तो अमेरिकी जीवन आर्थिक सम्पन्नता के कारण पूर्ण आदर्शवादी होना चाहिये था। किन्तु स्थिति बिलकुल भिन्न है। अमेरिका का सबसे बड़ा सुगठित व्यवसाय जुर्म है। संसार में सबसे अधिक अपराध अमेरिका में ही होते हैं। राजनीति और अर्थ इस विसंगति का कारण नहीं है।

मेरे मित्रो, इसका कारण आध्यात्मिक अज्ञान है, आत्म विस्मृति है। आत्मा को विस्मृत करके जीवन का जो दृष्टिकोण बन सकता है यह सब वही है। छान्दोग्य उपनिषद् में आत्मविस्मृति और आत्मस्मृति को लेकर एक कथानक दिया गया है। प्रजापति के पास इन्द्र और विरोचन अनश्वरता का गुर सीखने गये। इन्द्र देवों के प्रतिनिधि थे और विरोचन असुरों का। प्रजापति ने दोनों को अमृत विद्या का उपदेश दिया। उपदेश मौखिक नहीं प्रायोगिक था। दोनों को जल के किनारे खड़ा कर दिया गया। प्रजापति ने कहा- 'जल में झांक कर देखो जो दिखलाई देता है, वह पुरुष है। यह पुरुष अव्यय है, अमर है। जो इसको जान लेता है, अमृत हो जाता है।' विरोचन ने जल में झांक कर देखा तो उसे अपना ही प्रतिबिम्ब दिखाई दिया। वह हिला तो बिम्ब भी हिला। उसने पुष्पहार धारण किया तो बिम्ब ने भी किया। इस प्रयोग से विरोचन ने यह निष्कर्ष निकाला कि यह द्रष्टव्य सत्ता ही पुरुष है और अमृत है। अस्तु इसकी ही पूजा उपसना होनी चाहिए। विरोचन प्रजापति के उपदेश से संतुष्ट होकर असुर लोक चला गया। उसने असुरों, को उपदेश किया कि यह दिखाई पड़ने वाला शरीर ही सत्य है और इसकी पुष्टि तुष्टि हीर परम धर्म है। इस शरीर से भिन्न कोई पुरुष तत्त्व नहीं है। इस प्रकार असुर विरोचन ने भोग मार्ग की स्थापना की। इस मार्ग के आचार्य चार्वाक् ने काम को परम पुरुषार्थ कहा और ऐन्द्रिक सुख को जीवन की सार्थकता। उसने कहा-'यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पीवेत्, भस्मी भूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।।'

अर्थात् 'खाओ, पीयो और मौज करो चाहे कर्जा करो घी पीयो। शरीर के भस्म जो जाने पर फिर कौन आता और कौन जाता है?'

इन्द्र ने भी अपना प्रतिबिम्ब जल में देखा। पुष्पाहार धारण करे फिर देखा। 'ओह, मेरे माला धारण करने पर इस प्रतिबिम्ब पुरुष ने भी माला धारण कर ली।' उसने माला उतार कर फिर देखा तो प्रतिबिम्ब पुरुष को भी माला से रहित पाया। इन्द्र कुछ क्षण रुके और सोचा। एक विचार उत्पन्न हुआ। 'जो बदलने वाला है, परिवर्तन धर्मा है, वह अनश्वर कैसे हो सकता है।' इन्द्र प्रजापति के पास गए, अपनी शंका निवेदित की और उपदेश की प्रार्थना की। प्रजापति इन्द्र की पात्रता से प्रसन्न हुए और अमृत विद्या का उपदेश किया। देवराज विद्या लेकर देवलोक चले गए। उन्होंने देवताओं को बतलाया कि बदलने वाला यह शरीर मरण धर्मा है। इस शरीर में जो पुरुष है, जो देखता है, सुनता है और करता है पर स्वयं नहीं दिखाई पड़ता, वह अमृत है। अतः देहासक्ति से हटकर उस परम तत्व को सत्य और शाश्वत मानो। देवताओं ने इन्द्रियों के भोगवाही मार्ग को छोड़कर ज्ञान का सूक्ष्म मार्ग ग्रहण किया। स्थूल शरीर और उसके क्षणिक सम्बन्ध वाचक व्यक्तित्व को महत्व न प्रदान करके व्यापक आत्मतत्व को व्यवहार का आधार बनया। देवगण इस प्रकार नाम रूप की संकीर्णता से निकलकर चैतन्य के अनन्त में प्रविष्ट हुए। अनन्त में प्रवेश करना ही अन्त को जीतना है। अतः शाश्वत प्रेम, सहयोग और यज्ञ देव जीवन का दर्शन बन गया। आनन्दोपलब्धि जीवन की सार्थकता और ज्ञान जीवन का चरम लक्ष्य बना। सौन्दर्य एवं लोक मंगल की भावना भौतिक जीवन का आधार बन गए। लोक-संग्रह कर्म को अमृत से जोड़ने वाला तत्व बना। आत्मविद् होने से जीवन का सारा दृष्टिकोण ही बदल गया। इस उदात्त

दिव्यता ने देवों को अजर अमर अपराजेय बना दिया। दूसरी ओर आत्म-विस्मृत होने के कारण असुर सर्वदा पराजित होते रहे और दुःख पाते रहे।

उपनिषद् की यह आलंकारिक कथा सरल और स्पष्ट रूप में आत्म-स्मृति और विस्मृति से होने वाले प्रभाव को प्रकट करती है। आज की मानवता को आत्मविस्मृति का महारोग है। इस रोग का जन्म अज्ञान से हुआ। अन्धविश्वास, राजनैतिक साम्प्रदायिकता, वीर पूजा और संकीर्ण देशभक्ति ने इस रोग को महारोग में बदल दिया। मनुष्य जो भी कुछ अपने स्वरूप में है वह नष्ट हो गया और जा वह नहीं है मुख्य हो गया। असत्य को सत्य समझकर धारण कर लिया गया जिसका प्रभाव चिन्तन और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर पड़ा। झूठ का कुहासा फैलता गया, गहराता गया। आखिकार शान्ति और आनन्द इस अन्धकार में खो गए। प्रतिपल जीवन उलझता चला गया। परिणामस्वरूप नैराश्य संत्रास और पीड़ा की घुटन फैलने लगी। सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग का साहस समाप्त हो गया। हर देश और राष्ट्र ने अपने अपने झूठ गढ़ लिए। जनता को झूठ में जीने के लिए बाध्य किया गया। राज्य के चाटुकार शब्दशिल्पियों और तथाकथित धर्म ध्वजियों ने झूठ को आध्यात्म के रंग में रंग कर राज्य और शक्ति सम्पन्नों के शोषण को स्वीकृति प्रदान की। मानवता पर हर सम्भव अत्याचार किए गए। आज भी प्रतिगामी तत्व धर्म राष्ट्र और सिद्धान्तों की आड़ में झूठ को चलाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

किन्तु सत्य की मांग मानव चैतन्य की मांग है। इसको दबाया जा सकता है किन्तु नष्ट नहीं किया जा सकता। सत्य एक है। सबके लिए एक जैसा। अतः सत्य की ईप्सा, व्याकुलता सबमें एक जैसी है। इसलिए भिन्न-भिन्न समय में हर देश और राष्ट्र में ऐसे महापुरुष होते रहे हैं जो स्वीकृत असत्य के विरोध में खड़ हुए। सत्य की अलौकिक रश्मि को मानव के लिए धरातल पर लाये और समाज ने उस प्रकाश में यथार्थ को पहचाना। ऐसे महापुरुषों को उनके जीवन काल में कभी स्वीकृति प्रदान नहीं की गई। स्वीकृति तो दूर की बात है लोगों ने उन महापुरुषों को जीने भी नहीं दिया। सत्य का अवतरण करने के अपराध में सुकरात को विष पीना पड़ा और गैलीलियो को दण्डित किया गया। हमारे अपने देश में सत्य प्रकाश के लाने वाले युग पुरुष दयानन्द को कौन से ऐसे कष्ट थे जो नहीं दिए गए। अन्त में उस सत्य के अवतारक को भी विष पीना ही पड़ा। मानवता और अहिंसा के मूर्तिमान स्वरूप महात्मा गांधी को गोली खानी पड़ी। यद्यपि समाज सत्य के लाने वालों की बलि लेता रहा है फिर भी सत्यान्वेषणा की वृत्ति नष्ट नहीं हो सकी। सत्य की ईप्सा समाप्त नहीं हो सकती। मानव चेतना का सत्य में रूपान्तरण जीवन की अवश्यम्भाविता है। जब तक पूर्ण सत्य की उपलब्धि नहीं जो जाती पीड़ा का यह चक्र चलता रहेगा।

(क्रमशः)

thearyasamaj.org

काव्यायन

तिरंगे! तुझको करूँ प्रणाम

❑डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर

तिरंगे! तुझको करूँ प्रणाम।
है तीनों रंग तेरे अभिराम।।
'केसरिया' दर्शाता है त्याग,
सिखाता है सब को अनुराग।
भरा जीवन का इसमें सार,
शमन करता अन्तस् की आग।
जगत् में चर्चित तेरा नाम।
तिरंगे! तुझको करूँ प्रणाम।।
'श्वेत' में इन्द्रधनुष के रंग,
अहिंसा सत्य शांति भी संग।
नहीं होने देंगे अब जंग,
भरेंगे जन-गण-हृदय उमंग।
अमर है 'चक्र अशोक' ललाम।
तिरंगे! तुझको करूँ प्रणाम।।
'हरित' है बना प्रतीक विकास,
है जिससे इस मधुवन में वास।
खिलेंगे इक दिन पुष्प-सहास,
हमारा है यह दृढ़ विश्वास।
तू है शत कोटि हेतु सुख-धाम।
तिरंगे! तुझको करूँ प्रणाम।।
चतुर्दिक तेरी जय जयकार,
सकेगा कौन मुझे ललकार?
बना तू भारत का सरताज,
किए सपने तूने साकार।
यूँ ही लहराये जा अभिराम।
तिरंगे! तुझको करूँ प्रणाम।।

–जी–02, लोरपुर रेज़ीडेन्सी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

जनता की आकांक्षा

❑डॉ. कैलाश निगम

दुखियों के काम आयेगी सरकार मोदी की।
दुष्टों पे कहर ढायेगी सरकार मोदी की।।
कोई भी यहाँ भूख से मरने न पायेगा
वो नीतियाँ बनायेगी, सरकार मोदी की।
कोई भी धर्म के लिये दंगा न करेगा
सद्भावना बढ़ायेगी, सरकार मोदी की।
अँधियार अशिक्षा है, इसका नाम मिटाकर
सूरज नया उगायेगी, सरकार मोदी की।
अपराधी एक भी न बचेगा स्वदेश में
अपराध हर मिटायेगी, सरकार मोदी की।
शिक्षित, श्रमिक के हाथ में देकर के नया काम
कुण्ठा का हिम गलायेगी, सरकार मोदी की।
संस्कृति रहे गौरवमयी कोई प्रदेश हो
सम्मान वो दिलायेगी, सरकार मोदी की।
सब हैं समान कोई भी छोटा-बड़ा नहीं
समता की सरि बहायेगी सरकार मोदी की।
जो काला धन विदेशी बैंकों में छिपा हुआ
छापों से निकलवायेगी सरकार मोदी की।
जो भी हैं प्राणघाती या करते हैं मिलावट
उनको बहुत सतायेगी, सरकार मोदी की।
कोई नकल न कर सके, प्रतिभा का मान हो
ऐसे नियम बनायेगी, सरकार मोदी की।
बिजली न बिना सूचना के जायेगी कभी
वितरण सही करायेगी, सरकार मोदी की।
सिवई बनेगी ईद में, होली में मिठाई
त्योहार हर मनायेगी, सरकार मोदी की।
अब तक के प्रयासों से ये विश्वास हो रहा
वादे सभी निभायेगी, सरकार मोदी की।

–4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

आँखों के तारे

❑देवकी नन्दन 'शान्त'

तुम हो हमारी, आँखों के तारे
सूना है ये जीवन बिन तुम्हारे

फूलों में हँसते हुए तुमको देखा
खींची तुम्हीं ने है सतरंगी रेखा
तुम हो पवन में तुम हो गगन में
संसार सागर है तुम हो किनारे
तुम हो हमारी आँखों के तारे।।१।।

झरनों से निकले हुए गीत हो तुम
हृदयों में बहती हुई प्रीत हो तुम
वीणा के स्वर हो स्वर जो अमर हो
वाणी का हर शब्द तुमको पुकारे
तुम हो हमारी आँखों के तारे।।२।।

वेदों ने गुणगान गाया तुम्हारा
मानव ने वरदान पाया तुम्हारा
ठुकरा न देना, अपना ही लेना
हम 'शान्त' आए हैं द्वारे तिहारे
तुम हो हमारी आँखों के तारे।।३।।

–इन्दिरा नगर, लखनऊ

पावन पन्द्रह अगस्त

❑सविता वाणी

आया पावन पन्द्रह अगस्त!

है स्वतंत्रता का महापर्व।
भर रहा हृदय में मान-गर्व
ध्वज तिरंगा लहराता है-
पुलकित होते जन-गण समस्त।

भारत सुत त्यागी-बलिदानी
फाँसी पर झूले सेनानी।
था मार भगाया गोरों को
कर दिया कुशासन सूर्य-अस्त।

सबके अच्छे दिन आएँगे
अनितम जन भी मुसकायेंगे।
अनुशासन की मुखरित 'वाणी'
अनुदिन सुकर्म में रहें व्यस्त।।

आया पावन पन्द्रह अगस्त!!

–गौरीगंज, जनपद–अमेठी(उ.प्र.)

राष्ट्रवाद

❑राजा भइया गुप्त 'राजाभ'

राष्ट्रवाद के लिए ही, जागा हिन्दुस्तान।
निःसन्देह अब विश्वगुरु, होगा देश महान।।

परिवर्तन की लहर ने, सेकुलर दिए नकार।
किया बड़े उत्साह से, राष्ट्रवाद स्वीकार।।

तथाकथित बौद्धिक, जिनकी खण्डित दृष्टि।
आज दंग हैं देखकर, राष्ट्रवाद की सृष्टि।।

राष्ट्रवाद के सामने, नतमस्तक सब वाद।
कल तक जो प्रतिवाद था, आज भिन्न संवाद।।

राष्ट्रवाद की आँच से, वोट बैंग बेहाल।
भारतमाता मगन है, देख समर्पित लाल।।

–बी2/356, सेक्टर–ए, जानकीपुरम, लखनऊ

कालजयी काव्य

स्वातंत्र्य-सूर्य महाराणा प्रताप

❑श्रीश्यामनारायण पाण्डेय

यज्ञ अनल सा धधक रहा था
वह स्वतन्त्र अधिकारी।
रोम-रोम से निकल रही थी
चमक-चमक चिनगारी।।

अपना सब कुछ लुटा दिया
जननी-पद - नेह लगाकर।
कलित-कीर्ति फैला दी है
निद्रित मेवाड़ जगाकर।।

भरा हुआ था उर प्रताप का
गौरव की चाहों से।
फूँक दिया अपना शरीर
हम दुखियों की आहों से।।

जग - वैभव उत्सर्ग किया
भारत का वीर कहाकर।
माता-मुख-लाली प्रताप ने
रख ली लहू बहाकर।।

भीषण प्रण तक किया, रक्त से
समर-सिंधु भर डाला।
ले नंगी तलवार बढ़ा
सब कुछ स्वाहा कर डाला।।

अरावली - उन्नत शिखरों पर
सजता रहा रणों को।
अपने शोणित से धोया था
माँ के मृदु-चरणों को।।

बढ़ता रहा प्रताप लगाकर
बाजी निज प्राणों की।
जहाँ हो रही थी वर्षा
चोखे चुभते बाणों की।।

रण-चण्डी को पिला दिया
शोणित-मदिरा का प्याला।
बड़वानल सी धधका दी थी
क्रोधानल की ज्वाला।।

उसके एक इशारे पर
वीरों ने ले तलवारें।
पर्वत-पथ रँग दिये रक्त से,
ले शत-शत खरधारें।।

गूँज रही जावर-माला में
उसकी अमर कहानी।
अब तक हल्दीघाटी के पथ
पर है समर-निशानी।।

रक्षा की तलवार उठाकर
समर किया लाखों से।
पोंछ दिये आँसू प्रताप ने
माता की आँखों से।।

निकल रही जिसकी समाधि से
स्वतन्त्रता की आगी।
यहीं कहीं पर छिपा हुआ है
वह स्वतन्त्र वैरागी।।

('हल्दीघाटी' से साभार)

अमर शहीदों को नमन!

❑गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र'

अमर शहीदों के चरणों में, आओ! श्रद्धा-सुमन चढाएँ।
भारत माँ के वीर सपूतों का, यशस्वी मान बढ़ाएँ।।

स्वतंत्रता का मूल्य चुकाया, नहीं भीख में हमें मिली।
रक्त और श्रम से सींचा है, तब उपवन में कली खिली।
'क्रान्ति अमर हो' घोष गुंजाकर, नींद उड़ा दी अंग्रेजों की।
देशभक्ति की हुँकारों से, आंग्ल-राज्य की नींव हिली।।
क्रान्तिकारियों की स्मृति में, कृतज्ञता से शीश झुकाएँ।
अमर शहीदों के चरणों में, आओ! श्रद्धा-सुमन चढाएँ।

अशफाकउल्ला, पंडित बिस्मिल, काकोरी काण्ड महानायक।
है धन्य शाहजहाँपुर जिसने अवतरित किये दो वर नायक।
वे आजादी के दीवाने, फाँसी के फन्दे पर झूल गए।
राष्ट्रवीणा झंकृत कर दी, खो गए सुरों संग चिरगायक।।
राष्ट्रधर्म के संस्थापन हित, फिर सोयी चेतना जगाएँ।
अमर शहीदों के चरणों में, आओ! श्रद्धा-सुमन चढाएँ।

अभी अधूरा यज्ञ राष्ट्र का, आया अभी सुराज नहीं है।
भारत माता के मस्तक पर, पूर्ण सुरक्षित ताज नहीं है।
त्याग भुला कर सुविधा भोगी, बैठ गए हैं सिंहासन पर।
कैसे स्वर्णिम कल आयेगा, जब आशामय आज नहीं है।।
मातृभूमि की सत्य शपथ लें, सपने सच करके दिखलाएँ।
अमर शहीदों के चरणों में, आओ! श्रद्धा-सुमन चढाएँ।

–4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

thearyasamaj.org

राजस्थान-समाचार

महाशय धर्मपाल ने किया विवरणिका पुस्तक का विमोचन

कोटा, २१ जुलाई। 'आर्य समाज द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आयोजित किए जा रहे आठवें युवक-युवती सम्मेलन की सफलता के लिए मेरा आशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ। आर्य समाज के संगठन को मजबूती देने के लिए यह एक दूरदर्शितापूर्ण कदम है। इस प्रकार के आयोजनों से आर्य परिवारों में मेलजोल बढ़ेगा, रिश्ते मजबूत होंगे तथा युवा पीढ़ी का आर्यसमाज के प्रति लगाव बढ़ेगा। इससे आर्य विचारधारा का प्रचार प्रसार होगा।'

उक्त विचार महाशय धर्मपाल आर्य, चेयरमैन एम.डी.एच.मसाले ने आर्य समाज कीर्तिनगर दिल्ली में आयोजित आठवें आर्य युवक-युवती सम्मेलन की विवरणिका पुस्तक के विमोचन समारोह के अवसर पर आयोजित एक सादे समारोह में निजी आवास पर व्यक्त किये। इस अवसर पर विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज जिला सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में आर्य समाज कोटा द्वारा किये जा रहे सामाजिक, धार्मिक तथा आध्यात्मिक, जनकल्याणकारी कार्यों की विस्तृत जानकारी दी। *(अरविन्द पाण्डे)*

अर्जुनदेव चड्ढा ने अपना जन्म दिवस निराश्रित बच्चों के बीच मनाया

कोटा, १८ जुलाई। मधुस्मृति संस्थान के बच्चे मंगलगान गा रहे थे, गायत्री मंत्र के उच्चारण के साथ जन्मदिन के मंगलगीत भी गुनगुना रहे थे। आखिर मधुस्मृति संस्थान के बच्चों के अपने प्रिय मामा जी का जन्मदिन जो था। समाजसेवी और आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्ढा ने अपना ७१वाँ जन्मदिन मधुस्मृति संस्थान के निराश्रित बच्चों के बीच मनाया। बच्चों ने 'मामा जी' के दीर्घायु की कामना की तथा बधाई दी। इस अवसर पर श्री चढ्ढा ने कहा कि जो व्यक्ति दूसरों के सुख और दुख में सहभागी होता है, वहीं परोपकार है। मंदिर में मूर्तियों को भोग लगाकर पुण्य कमाने वाले लोग तो बहुत मिल जाएंगे, लेकिन ईश्वर द्वारा निर्मित इन साक्षात् मूर्तियों को अपना बना लेने से बड़ा कोई पुण्य नहीं हो सकता है। हर व्यक्ति को अपने मांगलिक कार्यों को जरूरतमंदों और निराश्रितों के बीच ही मनाना चाहिए।

आर्य समाज के विद्वान् रामप्रसाद याज्ञिक ने कहा कि भारतीय संस्कृति खुशी के क्षणों को दूसरों के बीच बांटना सिखाती है। निराश्रितों और पीड़ितों को गले लगाने से खुशी के क्षण द्विगुणित हो जाते हैं। आर्य समाज विज्ञान नगर के प्रधान जे.एस.दुबे ने कहा कि अर्जुनदेव चढ्ढा मधुस्मृति में आकर सदैव बच्चों को परिवारिक माहौल देते हैं। इन बच्चों को कभी भी अपने परिजनों की कमी महसूस नहीं होने देते हैं। इस अवसर पर श्रीमती पूनम चढ्ढा भी उपस्थित थीं।

दिल्ली-समाचार

आठवां आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन सम्पन्न

नई दिल्ली, २० जुलाई। 'समान गुण-कर्म और स्वभाव वाले युवक-युवतियों के बीच रिश्ते आर्य मर्यादा की स्थापना का दूरदर्शितापूर्ण प्रयास है। इससे आर्य विचारधारा वाले परिवारों के बीच मेलजोल से आर्य समाज का विस्तार होगा। भविष्य में इसके अत्युत्तम परिणाम आयेंगे। समान विचार वाले जीवन साथी से विवाह से समझौतावादी गृहस्थ जीवन से छुटकारा मिल दिलाता है।'

उक्त विचार आठवें आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर मुख्य अतिथि अजय सहगल ट्रस्टी टंकारा ट्रस्ट ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित यह परिचय सम्मेलन विचार से विचारों के मेल की साकार परिणिति है। इसके लिए मेरी बहुत शुभकमनाएं तथा अथक परिश्रम के लिए राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चढ्ढा तथा उनकी टीम साधुवाद की पात्र है।

सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चढ्ढा ने सम्मेलन की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि आठवां आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन कीर्ति नगर आर्य समाज दिल्ली में प्रातः १० बजे आयोजित किया गया। उन्होंने कहा कि इससे पूर्व अब तक सात सम्मेलन जिसमें ६ दिल्ली में तथा एक सम्मेलन इन्दौर में सम्पन्न हुआ है। जिसमें लगभग ३७५ रिश्ते आर्य परिवारों में हुए हैं। आर्य समाज का यह कार्यक्रम समस्या का एक समाधान है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलन कर ईश्वर स्तुति, प्रार्थना उपासना के मंत्रोच्चार के साथ किया। इस अवसर पर आर्य भजनोपदेशिका श्रीमती सुदेश आर्या ने प्रभुभक्ति का सुन्दर भजन प्रस्तुत किया।

आर्य जगत् आपका चिर ऋणी है!

स्व.लाला दीपचन्द जी ने से सन् 1966 में आर्ष साहित्य जिसका मुख्य उद्देश्य ऋषि को न्यूनतम मूल्य पर प्रकाशन आपके ट्रस्ट ने अपने अल्प बहुत बड़ी साहित्यिक सेवा की है। आपके सुपुत्र श्री वेदपाल आर्य जी (जो वर्तमान में ट्रस्ट के सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष भी हैं) जी सभी आर्य समाज के कार्यों समाज के कार्यों में हर प्रकार

अपने व्यापार से प्राप्त धनराशि प्रचार ट्रस्ट की स्थापना की, दयानन्द कृत और आर्ष साहित्य करना तथा वितरण करना था। कार्यकाल में आर्य समाज की है तथा वर्तमान में भी कर रहा जी, श्री सत्यपाल जी, श्री धर्मपाल प्रधान एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि श्री ऋषिपाल जी एवं श्री यशपाल में अनवरत लगे हुए हैं तथा आर्य की सेवा दे रहे हैं।

१९१६ - १९८१

सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कार विधि, वेदार्थ कल्पद्रुम
जैसे ग्रन्थों के प्रामाणिक संस्करण उपलब्ध कराने वाले

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के संस्थापक

स्व. लाला दीपचन्द जी आर्य

सुन्दरम् काव्य गोष्ठी

लखनऊ, ४ अगस्त। साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक संस्था 'सुन्दरम्' के तत्वावधान में जानकीपुरम स्थित 'सुन्दरम् सदन' पर मासिक काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्था के संस्थापक अध्यक्ष कविवर नरेन्द्र भूषण तथा संचालन हरि प्रकाश हरि ने किया। मुख्य अतिथि डॉ.कैलाश निमग तथा विशिष्ट अतिथि अमृत खरे थे। वाणी वन्दना वरिष्ठ कवि घनानन्द पाण्डेय मेघ द्वारा प्रस्तुत की गयी। नरेन्द्र भूषण की सामाजिक समरसता से संबन्धित पंक्तियां थीं- 'ईश्वर अल्लाह हमने दिये उनके नाम हैं, सभी की मालिक वही रहमान है श्रीराम हैं।' डॉ.कैलाश निगम ने कहा- 'गरजते हैं जो वो बरसते नहीं हैं, बरसते हैं जो वो गरजते नहीं हैं।' श्री अमृत खरे का गीत 'हारे तो भी जीत है, जीते तो भी हार। खेल नहीं ये बावरे, इसको कहते प्यार' खूब सराही गयी। सुनील वाजपेयी का काव्यात्मक संदेश था- 'छद्म मृगतृष्णा के पीछे भागते हो किसलिये? अपनी मर्यादा की सीमा लांघते हो किसलिए?'

इस अवसर पर हरिश्चन्द्र निशान्त, अनवर जमाल अनवर, अशोक पाण्डेय अशोक, डा.अशोक शर्मा, फुरकत लखीमपुरी, हरि प्रकाश हरि, कृष्णानन्द राय, घनानन्द पाण्डेय मेघ, सिद्धार्थ शंकर त्रिपाठी, डा.नलिनी खन्ना, अनिल श्रीवास्तव, मृगांक श्रीवास्तव आदि ने अपनी अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कर श्रोताओं की तालियाँ बटोरीं। अंत में संस्था के अध्यक्ष नरेन्द्र भूषण के आभार एवं उद्बोधन के साथ गोष्ठी का समापन हुआ। *(हरिमोहन वाजपेयी, महासचिव)*

अनुरोध!

'आर्य लोक वार्ता' अपने सभी पाठकों, हितैषियों व सदस्यों से अनुरोध करता है कि वे अपनी सहयोग राशि, सदस्यता राशि अथवा अनुदान राशि आर्य लोक वार्ता के लखनऊ स्थित शिविर कार्यालय-19/838, प्रथम तल, शिव रेड, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016 के पते पर अविलम्ब भेज दें।

वैदिक विचारधारा के इस मासिक पत्र के नियमित प्रकाशन के लिए आप अपना सहयोग देकर वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में सहभागी बने।

-व्यवस्थापक

लखनऊ-समाचार

नरदेव आर्य का नरेन्द्र मोदी को पत्र

हिन्दी और संस्कृत इण्टर तक अनिवार्य

-नरदेव आर्य

सदियों के उपरान्त यह समय आया है कि जब हमने अपनी संस्कृति को स्मरण किया है, यह एक शुभ संकेत है।

सदन के प्रारम्भ में ही श्रीमती सुषमा स्वराज तथा कई सांसदों ने संस्कृत में शपथ ग्रहण की। यह एक शुभ संकेत है।

वास्तव में हमारी मातृभाषा संस्कृत ही है। लिखा भी है-"भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतः संस्कृतिस्तथा।" परन्तु अब संस्कृत ही नहीं है तो संस्कृति कहाँ से आयेगी? अब शुरूआत हुई है। जब पेड़ लगा है तो फल भी अवश्य आयेंगे। जो आचार संहिता या नेतिकता संस्कृत में है, वह आपको किसी भाषा में नहीं मिलेगी। 'विद्या ददाति विनयं'- विद्या वह है जो विनम्रता देती है, उच्छृंखलता नहीं, यह प्रत्यक्ष उदाहरण है।

अतः संस्कृत से ही देश का उद्धार हो सकता है। अन्त में कुछ सुझाव-

१. हिन्दी और संस्कृत प्रथम से १२ तक अनिवार्य भाषा होनी चाहिए, आई.ए.एस. तथा पी.सी.एस. में भी संस्कृत और हिन्दी अनिवार्य विषय होना चाहिए।

२. शिक्षा में आमूल चूल परिवर्तन होना चाहिए।

'विनम्र' का सारस्वत अभिनन्दन

लखनऊ, २५ जुलाई। सुपरिचित कवि श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' के ६४वें जन्म दिवस पर उनके आवास पर अखिल भारतीय साहित्य परिषद् तथा अनन्त अनुनाद साहित्यिक संस्था द्वारा सारस्वत अभिनन्दन कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें परिषद् के महामंत्री सुनील कुमार वाजपेयी तथा संस्था के अध्यक्ष घनानन्द पाण्डे 'मेघ' सहित अनेक कवियों द्वारा उन्हें स्वस्थ, सानन्द एवं सतत् साहित्य सेवा के लिए शुभकामनाएं अर्पित की गयीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता ने की, जिसमें वरिष्ठ वैज्ञानिक साहित्यकार तथा 'शब्दिता' पत्रिका के संरक्षक-सम्पादक डॉ.रामकठिन सिंह मुख्य अतिथि तथा सुन्दरम साहित्यिक संस्था के अध्यक्ष नरेन्द्र भूषण विशिष्ट अतिथि थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ अतिथियों द्वारा माँ वाणी को माल्यार्पण तथा दीपार्चन से हुआ। घनानन्द पाण्डे 'मेघ' के सुमधुर कण्ठ से शारदार्चन के पश्चात् सरस काव्य संध्या में राहुल देव, ओम प्रकाश मिश्र 'नीरव', राजाभइया गुप्ता 'राजाभ', डॉ. विद्याधर द्विवेदी, अशोक कुमार पाण्डेय 'अशोक', घनानन्द पाण्डे, डॉ.अशोक शर्मा 'अमृत', कृष्णानन्द राय, डॉ.रामकठिन सिंह, गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' तथा नरेन्द्र भूषण ने ललित रचनाओं का पाठ किया। गोष्ठी का संचालन कवि हरिप्रकाश 'हरि' न किया। अध्यक्ष डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने निम्नांकित छन्द द्वारा 'विनम्र' के साहित्यिक अवदान को रेखांकित किया-

कविता नभ में वह कौन 'विनम्र', जो दीप्ति नई दमका रहा है,
निज काव्य में भामा के वीर चरित्र का, प्रेरक चित्र बना रहा है,
कहीं टोडर भूप के राज्य प्रबंध का, खाका नवीन दिखा रहा है,
कहीं आर्यों के देश में आर्य के लोक की वार्ता की शान बढ़ा रहा है!

सिर झुकेगा बस उनके नमन के लिए!

लखनऊ, ६ अगस्त। काकोरी काण्ड दिवस की स्मृति में चेतना साहित्य परिषद् के तत्वावधान में देशभक्ति काव्य-संध्या का आयोजन नन्द निकेतन, नाका हिण्डोला में सम्पन्न हुआ जिसमें के.के.सिंह 'मयंक' ने स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले क्रान्तिकारियों को इन शब्दों में श्रद्धा-सुमन अर्पित किये- 'सिर झुकेगा बस उनके नमन के लिए। हँसते-हँसते मिटे जो वतन के लिए।' कार्यक्रम की अध्यक्षता की सरस कपूर ने जिसमें मुख्य अतिथि सौरभ प्रताप गढ़ी तथ विशिष्ट अतिथि थे डॉ.ब्रजेन्द्र निगम। अतिथियों के अतिरिक्त जिन कवियों ने देशभक्ति से ओतप्रोत रचनाओं का पाठ किया उनमें डॉ.दिनेश अवस्थी, अरविन्द झा, गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', प्रमोद द्विवेदी, जगदीश शुक्ल, अखिलेश निगम, डॉ.शिवभजन कमलेश, डॉ.नलिनी खन्ना, शरद मिश्र सिन्धु, डॉ.आशुतोष वाजपेयी, भोलानाथ अधीर, नवीन वैसवारी, रमाशंकर सिंह, गौरव अवस्थी आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही। *('विनम्र')*

thearyasamaj.org

लखनऊ-समाचार

वैदिक ऋचाओं एवं सामगान की स्वरलहरियाँ गूँजी

काँवड़ियों की लम्बी लम्बी कतारों, बम भोले के जयकारों तथा शिवलिंगों पर दुग्धधारों के थमने के बाद- मंदिरों में, विशेषकर आर्य समाज मंदिरों में पवित्र वैदिक ऋचाओं और सामगान की स्वरलहरियों के गूँजने का वक्त आ गया है। प्रायः प्रत्येक आर्य समाज मंदिर श्रावणी से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक वेद प्रचार सप्ताह मनाने हेतु सज गया है। कुछ प्रमुख आर्य समाजों के वेद प्रचार सप्ताह मनाने की सूचना 'आर्य लोक वार्ता' के पास उपलब्ध है :

आर्य समाज सण्डीला जिला-हरदोई
वेद प्रचार एवं संस्कृत-संरक्षण

आर्य समाज सण्डीला के नवनिर्वाचित प्रधान श्री अवनीश सूचित करते हैं कि सण्डीला में १०.०८.१४ से १७.०८.१४ तक प्रातः सायं यज्ञ, प्रवचन इत्यादि कार्यक्रम आर्य समाज मंदिर के अलावा परिवारों में भी सम्पन्न हुए। १२ अगस्त को श्री रामजी के आवास पर वेद प्रचार के साथ ही पुत्री 'संसृति' का अन्न प्राशन संस्कार भी किया गया। १३ अगस्त को कार्यक्रम नगर के लब्धप्रतिष्ठित आर्य समाजी श्री गंगाराम के सुपुत्र अवनीश के आवास पर हुआ। इसके बाद रामशंकर मुनीम के यहाँ यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इसी के समानान्तर संस्कृत-संस्कृति संरक्षण प्रचार परिषद के तत्वावधान में संस्कृत-दिवस १०.०८.१४ को मनाया गया जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में सुश्री सरिता आर्या, श्रद्धा शुक्ला तथा विदुषी एवं यशी तथा कल्पना को संस्कृत में वेदपाठ, निबन्ध लेखन हेतु श्रेष्ठता पुरस्कार प्रदान किये गये। विजेताओं को पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम १७.०८.१४ को श्रीकृष्णजन्माष्टमी पर्व के अवसर पर किया गया जिसमें अन्य वैदिक विद्वानों ने व्याख्यान, प्रवचन के माध्यम से श्रीकृष्ण के चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। *(डा.सत्य प्रकाश के सौजन्य से)*

आर्य समाज इन्दिरा नगर में वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज इन्दिरा नगर के तत्वावधान में विभिन्न परिवारों में सायं ५.३० से ८ बजे तक वेद प्रचार सप्ताह श्री रामेन्द्र कुमार वर्मा की अध्यक्षता में मनाया गया। श्रावणी उपाकर्म १०.०८.१४ से श्रीकृष्णजन्माष्टमी १८.०८.१४ तक यज्ञ और सत्संग का कार्यक्रम जिन परिवारों में सम्पन्न किया गया उनके नाम हैं- संजय कुमार सिंह, ७६ दयाल रेजीडेन्सी, फैजाबाद रोड (१०.०८.१४); अभय पाल सिंह, ११/१०८०, संस्कार वाटिका, इन्दिरा नगर (११.०८.१४); जे.पी.आर्य, सी-४३६, इन्दिरा नगर (१२.०८.१४); रत्नेन्द्र कुमार जौहरी, ए-१०० के सामने, हरिओम पार्क, इन्दिरा नगर (१३.०८.१४); सुरेन्द्र कुमार निगम, कमता (१४.०८.१४); डोरी लाल, ३५ गुरुभारती पुरम, सेक्टर-६, इन्दिरा नगर (१५.०८.१४); वेलफेयर सेन्टर, एच.ए.एल.टाउनशिप, फैजाबाद रोड (१६.०८.१४); डा.आर्येन्द्र कुमार जौहरी, ६३१/१, सेक्टर-८, दीपक नगर के पीछे, इन्दिरा नगर (१७.०८.१४) तथा अरुण कुमार सिंह, २ विजय प्रताप नगर, पटेल नगर, इन्दिरा नगर (१८.०८.१४)।

उपर्युक्त परिवारो में क्रमशः श्री रमेश चन्द्र त्रिपाठी, लक्ष्मण प्रसाद आर्य, डोरी लाल आर्य, रामगोविन्द ठाकुर, इं.वेद प्रकाश, प्रो.इन्द्रदेव गुप्त, नवनीत निगम ने प्रवचन दिया। वेद प्रचार सप्ताह को अधिक प्रभावशाली बनाने के उद्देश्य से श्री सत्य प्रकाश आर्य, भजनोपदेशक, बाराबंकी को भी आमंत्रित किया गया। बालकों में वैदिक धर्म के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने हेतु सामान्य ज्ञान प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। *(रमेश चन्द्र त्रिपाठी, मंत्री)*

आर्य समाज आदर्श नगर वेद प्रचार सप्ताह एवं
'ऊर्मिला स्मृति मणिदीप' पुस्तक का विमोचन

आर्य समाज आदर्श नगर आलमबाग द्वारा १० से १३ अगस्त तक प्रभातफेरी के माध्यम से जनजागृति का संदेश दिया गया। १४, १५, १६ अगस्त को आर्य समाज मंदिर में प्रातःकाल ६.४० से १० बजे तक तथा सायंकाल ६.४५ से ६ बजे तक यज्ञ, संध्या, भजन एवं वेदोपदेश का कार्यक्रम होता रहा। इस अवधि में प्रसिद्ध विद्वान् डॉ.ज्वलंत कुमार शास्त्री, अमेठी का वेदोपदेश तथा पं.सत्यपाल 'सरल' देहरादून को भजनोपदेश हेतु आमंत्रित किया गया। ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

दि. १७ अगस्त २०१४ को आर्य समाज के मंत्री सतीश निझावन द्वारा अपनी धर्मपत्नी स्व.ऊर्मिला निझावन की पुण्यस्मृति में प्रकाशित 'ऊर्मिला स्मृति मणिदीप' का विमोचन किया गया। समस्त आगंतुक आर्यजनों को तथा आर्य समाजों को प्रकाशित पुस्तक उपलब्ध कराने का उदारतापूर्ण कार्य सतीश निझावन ने किया।

सम्पादक की डायरी

जन्म दिवस दि.०८.०८.१४ : ११/४६, इन्दिरा नगर, कायाकल्प पार्क के सामने। भारतीय स्टेट बैंक महानगर शाखा के एक उच्च पद पर कार्यरत श्री मुकेश चन्द्र मित्तल के आवास पर पौत्र आयुष्मान शुभ मित्तल के जन्म दिवस पर यज्ञ का आयोजन डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में किया गया। चि.शुभ के माता-पिता श्रीमती ऋचा एवं अंक मित्तल तथा दादा, दादी- श्री मुकेश मित्तल एवं श्रीमती ममता मित्तल इत्यादि पारिवारिक जनों ने यज्ञ में भाग लिया तथा बालक को आशीर्वाद दिया। (सौजन्य-श्री रमेशचन्द्र त्रिपाठी)

जन्म दिवस दि.०८.०८.१४ : कु.ओषा पाण्डेय (सुपुत्री श्री श्रीशरत्न पाण्डेय), बसंतकुंज, हरदोई रोड, लखनऊ के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में वैदिक यज्ञ श्रीमती रमा आर्य 'रमा' के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। भजन एवं प्रवचन के अनन्तर ओषा के समस्त अभिभावकों एवं समकक्ष पारिवारिक जनों ने आशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ अर्पित कीं। प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

श्री उदयवीर सिंह यादव वरिष्ठ पी.सी.एस.

वरिष्ठ पी.सी.एस. श्री उदयवीर सिंह यादव; जिन्हें हमने 'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-२०१४' में पुरस्कार वितरण हेतु आमंत्रित किया था; अभी तक प्रदेश सरकार में सम्भागीय खाद्य नियंत्रक (आर.एफ.सी.) पद पर तैनात थे। १५ अगस्त २०१४ स्वतंत्रता दिवस के पावन पर्व पर आपको निदेशक, उ.प्र.पंचायती राज के पद पर नवीन नियुक्ति दी गई है।

श्री उदयवीर सिंह यादव प्रदेश के चरित्रवान् सुयोग्य एवं दक्ष प्रशासक के रूप में अपनी अलग पहचान रखते हैं। आपको 'आर्य लोक वार्ता' की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ!

'आर्य लोक वार्ता' सम्मान

'आर्य लोक वार्ता' के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य के सम्मान में आयोजित एक कार्यक्रम में श्रीसत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट, लखनऊ के संयोजक श्री आर.के.शर्मा ने कहा कि 'आर्य लोक वार्ता' का प्रकाशन हमारे लिए गौरव का विषय है क्योंकि 'आर्य लोक वार्ता' द्वारा हमें ऐसी जानकारियाँ प्राप्त होती हैं; जो अन्यत्र दुर्लभ हैं।

श्री शर्मा ने कहा- 'मुझे स्मरण है कि कई वर्ष पूर्व का वह दिन भूलता नहीं है जब मैं आर्य समाज मंदिर, डालीगंज के वार्षिकोत्सव के प्रथम दिवस यज्ञ में सम्मिलित हुआ था; जिसका आचार्यत्व डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक, 'आर्य लोक वार्ता' कर रहे थे।' श्री आर.के.शर्मा ने कहा- डॉ.वेद प्रकाश आर्य के वे शब्द मुझे अच्छी तरह स्मरण हैं- 'ईश्वरस्तुति प्रार्थना के समय हमें इतना तल्लीन हो जाना चाहिए कि उस समय यदि प्रधानमंत्री भी आ जांय तो भी न उठें या अभिवादन इत्यादि न करें क्योंकि ईश्वर सर्वोच्च है। डॉ.आर्य के इस वक्तव्य ने मेरी जीवन शैली को विशेष प्रभावित किया तथा मेरी ईश्वर में आस्था और भी दृढ़ीभूत हो गई।' 'आर्य लोक वार्ता' के ऋत्विक् मण्डल का सदस्य बनते हुए श्री शर्मा ने कहा- 'आर्य लोक वार्ता' का संदेश घर घर में पहुँचाना ही डॉ.वेद प्रकाश आर्य का सच्चा सम्मान है।

श्री नन्दलाल नारंग नहीं रहे!

'ऊर्वारुकमिव बन्धनात् मुक्षीय'- "जैसे पकने पर ककड़ी या खरबूजा अपने आप टहनी से पृथक् हो जाता हैं; उसी तरह यज्ञमय जीवन जीने वाले याज्ञिक मृत्यु के बंधन से स्वतः छूट जाते हैं।" वेद की यह उक्ति विगत ४ अगस्त २०१४, सोमवार प्रातः ८ बजे चरितार्थ हुई; जब आर्य समाज चन्द्र नगर के उपप्रधान ८६वर्षीय वयोवृद्ध श्री नन्दलाल नारंग ने कुर्सी पर बैठे बैठे संसार से विदा ले ली। लोगों को उनके जाने की जानकारी तब मिली, जब वे दुनिया से कूच कर चुके थे। श्री नारंग की अंत्येष्टि आर्य समाज चन्द्रनगर द्वारा वैदिक विधि से की गई तथा अगले दिन आर्य समाज मंदिर में शोक सभा शान्ति यज्ञ का आयोजन हुआ; जिसमें समस्त पारिवारिक सदस्यों ने भाग लिया और दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की।

स्व.नारंग अपने पीछे दो पुत्रियों- श्रीमती वीना उतरेजा एवं तरुल सिक्का एवं दो पुत्रों- अशोक नारंग, दिलीप नारंक के परिवारों को छोड़ गये हैं। बताते चलें कि अंतिम समय तक श्री नारंग आर्य समाज के सत्संगों में उपस्थित होते रहे और उनकी चेतना बनी रही। ध्येयनिष्ठ और दृढ़ आर्य समाजी के रूप में श्री नारंग को सदैव याद किया जायगा। 'आर्य लोक वार्ता' के वे सच्चे हितैषी और प्रेमी थे। कई बार उन्होंने सम्पादक से घर चलने का आग्रह किया तथा 'आर्य लोक वार्ता' को विशेष सहयोग देने की इच्छा व्यक्त की थी। खेद है कि आज का काम कल पर टाल देने के कारण उनके आवास पर पहुँचकर उनकी सदिच्छा की पूर्ति नहीं की जा सकी। 'आर्य लोक वार्ता' अपने इस अभिभावक के निधन पर हार्दिक दुःख व्यक्त करता है तथा अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है! *(सम्पादक)*

कवि अशोक पाण्डेय दुर्घटनाग्रस्त

छन्दशास्त्री सुकवि अशोक पाण्डेय उस समय दुर्घटनाग्रस्त हो गये जब कि पैदल सड़क पार करते समय किसी अज्ञात स्टण्टबाज ने उन्हें अपनी चपेट में ले लिया। पाण्डेय के पैर में फ्रैक्चर हो गया तो हाथ में भी चोट आई है। उनकी चिकित्सा डॉ.राममनोहर लोहिया अस्पताल के अस्थि विभाग में हो रही है। हम शीघ्र ही पाण्डेय जी के स्वास्थ्य लाभ की कामना करते हैं।

स्टण्डबाजों से अपील है कि वे अपनी उच्छृंखलताओं से बाज आयें और योग्य पिता की सुयोग्य संतान बनें।

आर्य समाज चन्द्र नगर आलमबाग

आर्य समाज चन्द्र नगर द्वारा वेद प्रचार सप्ताह का कार्यक्रम २१.०८.१४ से २४.०८.१४ तक मनाया गया, जिसमें आर्य जगत के जाने माने विद्वान् डॉ.प्रशस्य मित्र शास्त्री (रायबरेली) को वेदोपदेश एवं उपेन्द्र शास्त्री (चंडीगढ़) को भजनोपदेश हेतु आमंत्रित किया गया। प्रातः एवं सायंकालीन उभय सत्रों में यज्ञ, भजनोपदेश तथा प्रवचनों का कार्यक्रम होता रहा। समापन के दिन रविवार २४.०८.१४ को विद्वानों को सम्मानित किया गया तथा ऋषि लंगर की भव्य व्यवस्था भी की गई।

आर्य समाज राजाजीपुरम - वेदप्रचार सप्ताह एवं
वार्षिक समारोह

आर्य समाज राजाजीपुरम के तत्वावधान में १५ से २१ सितम्बर २०१४ तक वेद प्रचार सप्ताह तथा वार्षिक समारोह में आर्यजगत के ख्यातिलब्ध विद्वान् आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी तथा भजनोपदेशक सुश्री पुष्पा शास्त्री हरियाणा पधार रही हैं। गत वर्षों की भांति समारोह का समापन श्राद्ध-दिवस अर्थात् समाज के पूजनीय वयोवृद्ध जनों को सम्मानित करके होगा। आर्य समाज राजाजीपुरम का यह समारोह देखने के लिए दूर दूर के नर-नारी एकत्र होते हैं और एक मेले का स्वरूप आर्यसमाज मंदिर में उमड़ पड़ता है। *(डा.आनन्द वर्णवाल)*

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
'वेदाधिष्ठान' 539क/234, हरीनगर, पो0-इन्दिरानगर, लखनऊ - 226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
9450500138

E-mail-
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
व्रती सदस्य	–	250 रु. वार्षिक
ऋत्विक् सदस्य	–	1,200 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	2,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	12,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

अत्यावश्यक

सभी प्रकार की सहयोग राशि निम्नांकित पते पर सम्पादक के नाम भेजने की कृपा करें-
डॉ.वेद प्रकाश आर्य
१६/८३८, प्रथम तल
रिंग रोड, इन्दिरा नगर
लखनऊ-२२६०१६

प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
डॉ.(श्रीमती)वीना कटियार, फर्रूखाबाद
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार

संरक्षक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा, राजस्थान
श्रीमती प्रमोद कुमारी, लखनऊ
श्रीमती शालिनी कुमार, लखनऊ
श्री कौशल किशोर श्रीवास्तव, लखनऊ
श्री जगदीश लाल खत्री, लखनऊ
श्रीमती कुसुम वर्मा, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री रघुनाथ सिंह आर्य, कानपुर
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई
शिवशंकर लाल वैश्य, सीतापुर

आवश्यक सूचना

कृपया शिविर कार्यालय के पते का उपयोग करें-
डॉ. वेद प्रकाश आर्य,
प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता
19/838, प्रथम तल, रिंगरोड,
इन्दिरा नगर, लखनऊ-226 016

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-२, हिमांशु सदन, ५-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' ५३६क/२३४ हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

ग्राम ग्राम में नगर नगर में, 'आर्य्य लोक वार्ता' घर-घर में